भारतीय संस्कृति का आत्मभाव

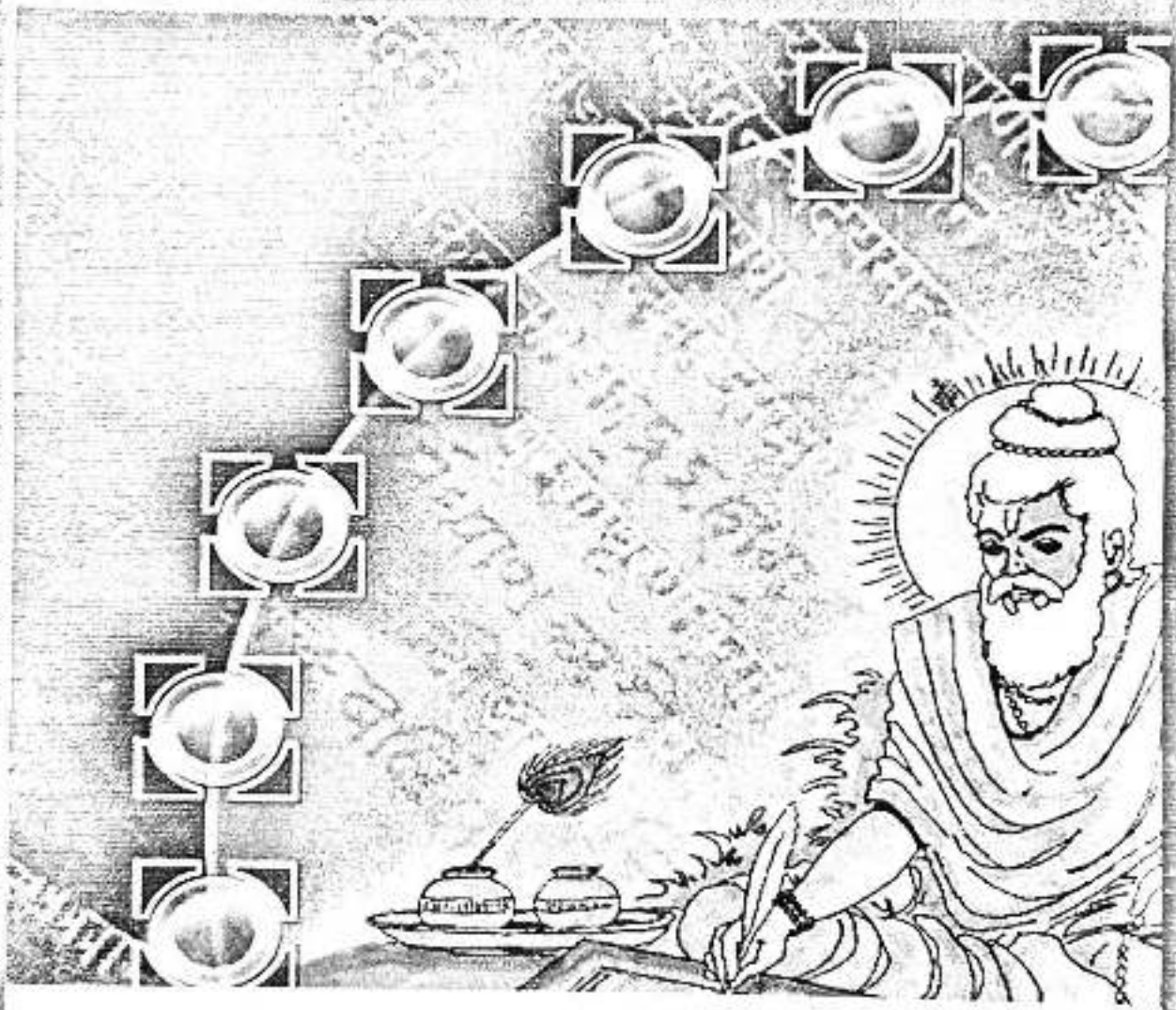

चन्द्र मोहन अग्रवाल

लेखक एवं उनके शोधपत्र

भारतीय संस्कृति की वर्तमान प्रासंगिकता

सी.एम. अग्रवाल

भारतीय संस्कृति की ऐतिहासिक प्रवृत्ति

अतुल कुमार सिन्हा

उत्तराखण्ड की संस्कृति के सरोकार

नीलम डोर्बी

भारतीय संस्कृति, नैतिकता एवं वर्तमान प्रासंगिकता

गोपाल कृष्ण जोशी

रवाँई जौनपुर क्षेत्र की लोक संस्कृति

गिरधर सिंह नेगी एवं मंजुल जोशी

मनोहरश्याम जोशी एवं आंचलिक संस्कृति

ममता पंत

जौनपुर भावर की धार्मिक मान्यताएं

चित्रेश मित्तल एवं मंजुल जोशी

भारतीय संस्कृति की विरासत

रिजवाना परवीन

विश्व को भारतीय संस्कृति की देन

रवि दूबे

भारतीय संस्कृति में वैश्वीकरण

राम प्रताप मौर्य

भारतीय संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था

राकेश चन्द्र छिम्वाल

प्राकृतिक संरक्षण एवं महिलायें

नीता रानी भारती

भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार

अपर्णा वत्स व आरती शर्मा

भारतीय दर्शन और समाज-व्यवस्था

मनुप्रताप सिंह व प्रणव शर्मा

पर्यावरण चिंतन

अरूणेश पराशर

नारी स्थिति चित्रण

सिद्धार्थ शंकर सिंह

विश्व कल्याण एवं भारतीय संस्कृति

राजेन्द्र सिंह खड़ायत

भारतीय संस्कृति के विविध स्वरूप

सरोज वर्मा

PRICE: 1200/-

ISBN: 978-81-88791-55-2

11. भारतीय संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था के मध्य अन्तर्सम्बन्ध 73
(सैंधव काल से अंग्रेजों के आगमन तक)
राकेश चन्द्र छिम्वाल
12. प्राकृतिक संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं
की भूमिका 82
नीता रानी भारती
13. भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार 87
अपर्णा वत्स व आरती शर्मा
14. भारतीय दर्शन और समाज-व्यवस्था 93
मनुप्रताप सिंह व प्रणव शर्मा
15. पर्यावरण चिंतन 99
अरूणेश पराशर, मोनिका मिश्रा, सुचिता बिष्ट, शिक्षा मिश्रा
16. नारी स्थिति चित्रण (विशेष सन्दर्भ बाल्मीकि एवं भवभूति) 104
सिद्धार्थ शंकर सिंह
17. विश्व कल्याण एवं भारतीय संस्कृति 111
राजेन्द्र सिंह खड़ायत
18. भारतीय संस्कृति के विविध स्वरूप 116
सरोज वर्मा
19. संस्कारों का वर्तमान समाज पर प्रभाव 116
अमित वैश्य
20. पर्यावरण संस्कृति एवं गौरा देवी 133
सावित्री कैड़ा
21. किन्नौर का देशज स्थापत्य: महासू मंदिर 155
गोपाल पाण्डे
22. संस्कृति के सुमधुर सोपान भारतीय संगीत 161
रश्मि भट्ट
23. वैदिक युगीन भारत में प्रचलित ब्याज व्यवस्था की वर्तमान समाज में
प्रासंगिकता 174
विवेक कुमार त्यागी व बी. डी. पन्त

13

भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार

अपर्णा वत्स एवं आरती शर्मा

प्राचीन साहित्य में कहा गया है कि व्यक्ति के लिए धर्म का पालन करना सबसे बड़ा पुरुषार्थ है तथा इस पुरुषार्थ की पूर्ति गृहस्थ आश्रम से ही होती है। व्यक्ति का समाज से सीधा व प्रत्यक्ष संबध गृहस्थ आश्रम में ही रहता है। गृहस्थ आश्रम से ही व्यक्ति के आर्थिक और सामाजिक जीवन का लौकिक अस्तित्व प्रारंभ होता है। हिन्दू षोडस संस्कारों में विवाह सबसे प्रधान स्थान रखता है। विवाह संस्कारों से ही गृहस्थ आश्रम प्रारंभ होता है। विवाह मनुष्य की मनोवैज्ञानिक सामाजिक एवं जैविक आवश्यकता है। आदिम सामाजिक व्यवस्था के मूल में विवाह संस्था को अधिकांश सामाजिक वैज्ञानिक स्वीकार करने लगे हैं। वन्य समाज के बाद धातु युग में इसे और अधिक महत्व प्राप्त हुआ। ऋग्वेद के अनुसार विवाह का उद्देश्य गृहस्थ जीवन में प्रवेश करके देवताओं की प्रसन्नता के लिए यज्ञ करना तथा सन्तानोत्पत्ति करना है।[1] विवाह द्वारा स्त्री धारा पुरुष धारामयी होकर कैवल्य की अधिकारिणी बनती है।[2] संस्कृत साहित्य के अनुसार समाज में मान्यता प्राप्त धार्मिक कृत्यों और विधियों द्वारा दो स्त्री-पुरुषों का विधिवत् मिलन ही विवाह संस्कार है जिसका उद्देश्य संतान प्राप्ति एवं रति के प्रयोजन को पूर्ण करना है। ऋग्वेद में विवाह को एक संपूर्ण रूप से प्रतिष्ठित और गौरव मंडित संस्कार के रूप में मान्यता दी गयी है। विद्योपार्जन के बाद विद्यार्थी का ब्रह्मचर्य आश्रम से घर लौटने पर यह संस्कार संपन्न होता था। विवाह व्यक्ति

महात्मा गाँधी
के विचार और वर्तमान विश्व

सम्पादकीय
प्रो. आराधना

महात्मा गाँधी पर आयोजित गोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्रों को संकलित कर एक पुस्तक का आकार देने का प्रो० आराधना का ये अत्यंत स्तुत्य प्रयास है। प्रस्तुत संकलन में गाँधी से जुड़े विविध पक्षों यथा– स्वदेशी, नैतिकता, सर्वोदय ग्राम स्वराज्य, पर्यावरण, गाँधी का शिक्षा दर्शन, शिक्षा का उद्देश्य, गाँधी का आर्थिक चिन्तन, धर्म, अहिंसा, खादी, वैश्वीकरण और गाँधी, आर्थिक विकेन्द्रीकरण और गाँधी, गाँधी: प्रार्थना और भगवान आदि पर शोध पत्र लिखे गये है।

इस पुस्तक के माध्यम से महात्मा गाँधी के विचार और वर्तमान विश्व पर उनका प्रभाव स्पष्टत: जाना जा सकता है। यह ग्रन्थ पाठकों को विचारात्मक एवं शोध–परक सामग्री उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध होगा तथा शोध के नवीन आयामों को स्थापित करेगा।

प्रो० के० के० शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

PRICE: 995/-
ISBN: 978-81-88791-41-5

अनुक्रमाणिका

	Chapter	Page No.
1	Relevance of Gandhiji in Present Scenario	1
2	महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता और वर्तमान विश्व	5
3	गांधी: प्रार्थना और भगवान	15
4	महात्मा गाँधी एंव आर्थिक विकेन्द्रीकरण	26
5	महात्मा गाँधी के विचार और वर्तमान विश्व	34
6	"भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधीजी का योगदान"	41
7	महात्मा गाँधी के सर्वोदय विचार एंव दर्शन की प्रासंगिकता	50
8	गाँधी जी पर जैन धर्म का प्रभाव	55
9	मद्यपान निषेध की दिशा में गाँधी दर्शन की भूमिका तथा वर्तमान समय में प्रांसगिकता	62
10	जीवन का प्रकाश एवं गाँधीवादी विचारधारा	71
11	महात्मा गाँधी और दलित	78
12	पंचायती राज व्यवस्था एवं ग्राम स्वराज्य और महात्मा गाँधी	83
13	Mahatma Gandhi on Environment	92
14	"शताब्दी पुरुष महात्मा गाँधी"	95
15	गाँधी जी-एक शीतल चन्द्रमा या जलता सूर्य	101
16	गाँधीजी और अहिंसा	112

7 महात्मा गाँधी के सर्वोदय विचार एंव दर्शन की प्रासंगिकता

डॉ० आरती शर्मा, वरिष्ठ प्रवक्ता
कृषक पी०जी० कॉलेज, मवाना
डॉ० अर्पणा वत्स, वरिष्ठ प्रवक्ता
आर०जी०पी०जी० कॉलेज, मेरठ

सर्वोदय गाँधी जी के आदर्शो व स्वप्नों की रूपरेखा है। महात्मा गाँधी ने सबसे पहले सर्वोदय शब्द का व्यापक रूप से वर्णन किया। रस्किन की पुस्तक "अन टू दिस लास्ट" ने गाँधी जी पर व्यापक प्रभाव डाला। गाँधी जी ने इस पुस्तक का सर्वोदय नाम से गुजराती में अनुवाद किया। हिन्दू दर्शन की प्रमुख बात हैं "सर्वे भवन्तु सुखिनः" इसे ही गाँधी जी ने सर्वोदय दर्शन में व्यक्त किया हैं। गाँधी जी ने सर्वोदय का अर्थ मानव–कल्याण से समझा। गाँधी जी के समाज परिवर्तन का उद्देश्य शोषण पर आधारित संस्थाओं को नष्ट कर एक ऐसे समाज की रचना करना हैं। वे ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे, जिसका आधार अंहिसा हो, जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता, और मर्यादा सुरक्षित हो तथा आपस में सभी के मध्य प्रेम और सहयोग की भावना हो, इस अहिंसक समाज को उन्होने सर्वोदय समाज की संज्ञा दी। सर्वोदय का अर्थ है, सबका उदय और सबके द्वारा उदय।

हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार वेदों में सभी प्राणियों के उदय की चर्चा है। महाभारत के "सर्वे भवन्तु सुरिवनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भ्रद्राणि पश्यन्तु, भा कश्चित् दुःख भागभवेत" में सर्वोदय का भाव छिपा है।[1] गीता के आत्मवत् सर्वभूतेषु और सर्वभूत हितरेताः में सर्वोदय तीर्थ के रूप में किया था। सर्वोदय एक व्यापक अर्थ रखता है। जो मानव–कल्याण की भावना से भरा है।

गाँधी जी ने रस्किन के विचारों से प्रेरणा प्राप्त कर "सर्वोदय" अर्थात् सभी की प्रगति की धारणा को प्रस्तुत किया। गाँधी जी लिखते है– मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मुझमें गहराई से भरी हुई थी उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब

14 "शताब्दी पुरुष महात्मा गाँधी"

अपर्णा वत्स
गरिमा त्यागी, इतिहास विभाग
आर० जी० पी० जी० कॉलिज, मेरठ

मनुष्य मरने के लिए पैदा होता है, और अन्य लोगों की भाँति महापुरूष भी अपना शरीर छोड़ देते हैं, पर वास्तव मे अपने पीछे छोड़े कार्य के द्वारा वे सदा के लिए अमर हो जाते हैं।[1]

यूँ तो भारतवर्ष में जितने भी संत महात्मा हुये उन्होंने जीवन को संयमी और त्यागी बनाने का उपदेश दिया, मगर गाँधी जी की विशेषता यह थी कि राजनैतिक क्षेत्र मे रहकर भी उन्होंने लोगों को संयमी और त्यागी बनाने का प्रयत्न किया। गाँधी सहज रूप से हर व्यक्ति के जीवन में प्रवेश कर लेते थे, क्या जादू था इस इंसान का, जिधर चला गया, जहाँ चला गया, हजारों और लाखों लोग उसके दर्शन को टूट पड़ते थे।[2]

गाँधी संत राजनीतिज्ञ, आर्थिक चितंक तो थे ही लेकिन असल में वे सभ्यता के व्याख्याता ही नहीं उसके निर्माता भी थे। उन्होंने केवल इतिहास की व्याख्या ही नहीं कि बल्कि उसका निर्माण भी किया।[3]

संसार ने पिछली पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक में जितने भी महापुरूषों को जन्म दिया है, उनमें अगर गाँधी जी को आज नहीं माना जाता है– तो आने वाले समय में भी सबसे बड़ा माना जायेगा। क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों और अंगों को विभिन्न वर्गों में बांटा नहीं बल्कि जीवन धारा को सदा एक ओर अविभाज्य माना।[4] राधाकृष्णन जी ने लिखा है–

"गाँधी जी के लिये सत्य ही शाश्वत है वह ही मानवता में निहित परामात्मा का स्वरूप है।"[5]

ऐसा नहीं है कि भारत के चिन्तन जगत में गाँधी के अलावा अन्य महान पुरूष और मार्गदर्शक नहीं हुये हैं। भारतीय इतिहास ऐसे महापुरूषों से भरा

World Crisis And Gandhian Vision

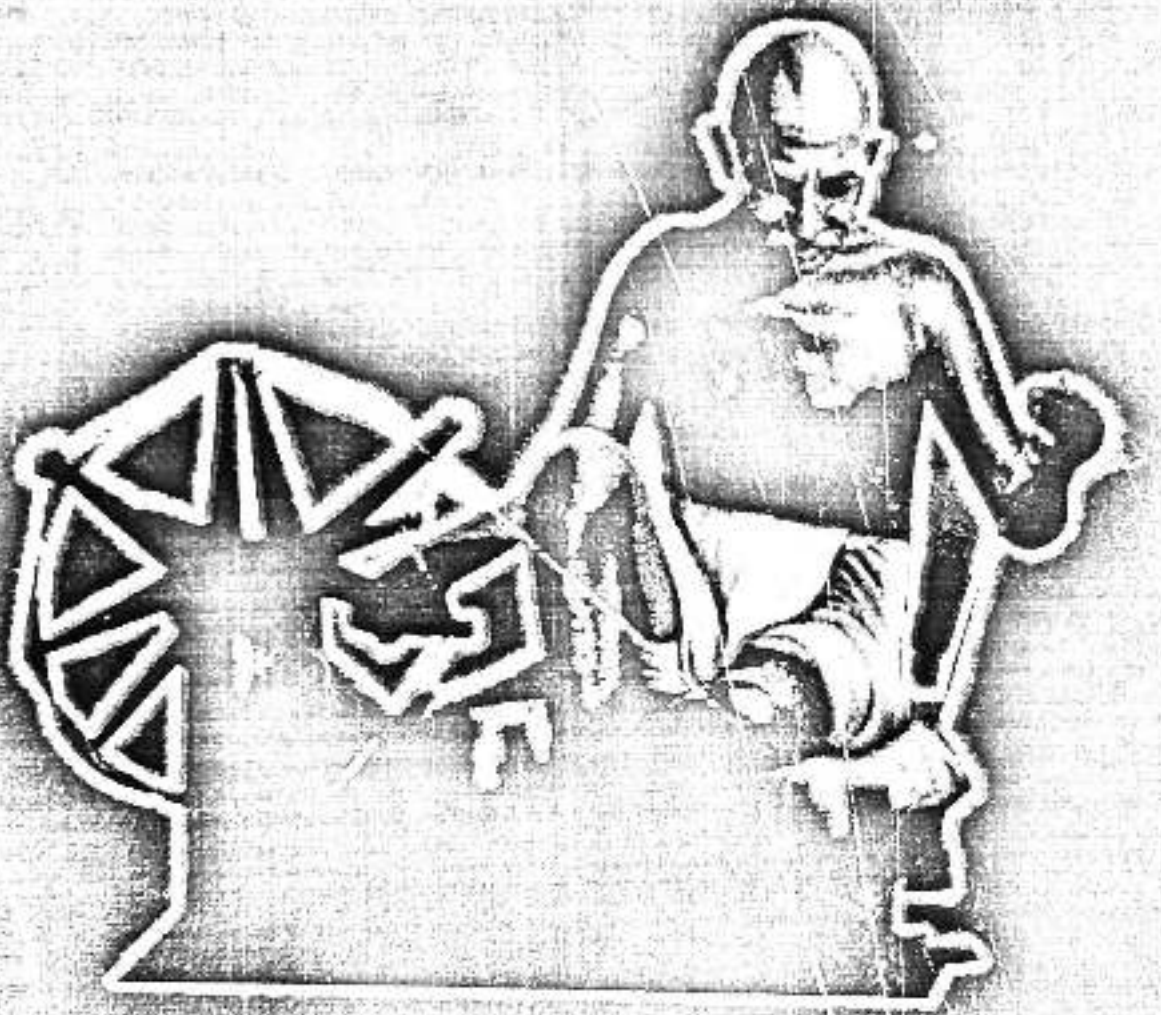

SHIVALI AGARWAL

World Crisis And Gandhian Vision

Published By :
Gandhian Study Centre
Department of Political Science
Ismail National (PG) College For Women,
Meerut

First Edition : 2015

ISBN No: 978-93-82166-34-4

@ All Rights Reserved

Price : Rs. 550 Only

Printed at:
Bhagwati Printers
Garh Road, Meerut

Note: The ideas and views express by the scholars in their full-length papers presented in the seminar and published in proceedings are solely their own. The organizing committee, college and editor of this proceedings may not necessarily agree with all the views expressed in the papers and not responsible for it.

Contents

1. Gandhi Thought about Science and Environment — 1
Neena Batra/Vandana Agarwal

2. Peace Establishment in World And Gandhian Way — 10
Ashu Pasricha

3. The Gandhian Approach towards Cultural Transformation..... — 14
Tanmay Gupta

4. Relevance of Gandhian Thoughts in 21st century — 16
J. K. Saroha

5. Learning for Life through Gandhi's Principles in 21st Century — 21
Manju Gupta

6. Gandhian Vision of Value Crisis in Present Scenario And Status of Training in Value Education in Teacher Education Institutions — 29
S. P. Singh/Rakesh Kumar Keshari

7. Sarvodaya And Constructive Programme of Gandhi to Save Humanity from Crisis — 40
Shivali Agarwal

8. Spiritual Vision of Gandhi Ji — 46
Bharati Sharma

9. Gandhi's Vision and Technique of Conflict Resolution — 50
Nisha Gupta

10. Depiction of Gandhi's Quit India Movement in Bhabani Bhattacharya's <u>*SO MANY HUNGERS!*</u> — 58
Anshu

11. Value Education & Crisis Today — 66
Sarita Sharma

12. Gandhi's Economic Thought And Globalisation : Some Reflections — 73
Kirti Sharma

13. Gandhian Thoughts And Environment — 78
Shivpal Singh/Ekta Vishnoi

14. Directive Principles Of State Policy And Gandhian Influence 86
Geetika Garg
15. Value Education in Gandhian Philosophy Towards Crisis solution in Modern Times 96
Gautamvir/Shagufta
16. Relevance of Mahatma Gandhi's Educational Philosophy 103
Kavita Agarwal
17. Gandhi Vision : A Solution For The Present World's Demand For Peace And Non-Violence 110
Narendra Nagar/Madhulika
18. Value Crisis Among Our Youth in Emerging Society And Value Oriented Education 116
Monika
19. Mahatma Gandhi As An Icon Of World PeaceAnd Non-Violence 124
Muzaffar Husain
20. Non – Violence And World Peace 128
Nisha Chaudhary
21. Satyagraha And Non-Violence : A Theoretical Perspective on Gandhian Conflict Resolution Techniques 134
Parul Saxena/ Amit Gupta
22. Gandhian Vision And Peace Establishment 142
Renu Agarwal
23. Mahatma Gandhi : A Visionary About Women 145
Sarita Sharma
24. World Crisis and Gandhian Vision 152
Satyavrat Singh Rawat
25. Peace Education & Non Violence : Vision of Mahatma Gandhi 159
Savita Taneja
26. Gandhian Vision, Home Science & Women Empowerment 163
Kanchan Saxena/ Garima Tyagi
27. Today's Indian Parliamentary Democracy And Gandhi 170
Bina Rai

28. Conflict Resolution and Gandhian Vision 179
Anshu Tyagi
29. Relevance Of *'SATYAGRAH'* In 21ST Centuary 188
Anamika/Sindhu Bala
30. Relevance of Gandhian Thoughts In Modern Time 193
Rajani Srivastava
31. Gandhian Solution For Pollitical And Social Justice In India : An Analysis 197
Reena Bishnoi
32. Gandhian Ideology To Economic Development 204
Poonam Garg/Pravesh Kumar
33. World Crisis and the Gandhian Vision Visual Art & The Message of Peace 210
Vinay Kumar
34. Gandhi : A Multi-Faceted Personality 216
Tarun Pratap Yadav/ Preeti Pandey
35. Mahatma Gandhi : His Vision and Peace Establishment 224
Nidhi Rani Singh
36. Gandhi and His Vision for Women Empowerment 231
Ashok Kumar/ Bhupendra Pratap Singh
37. Gandhi's Economic Ideology 239
Manju Shukla/Sugandha Shukla
38. Gandhian Thought And Peace Education 243
Anuradha Agarwal/ Sangeeta Tyagi
39. Creative Programmes For Peace Establishment 250
Shalini Verma/Shikha Banswal
40. Gandhi's Vision And Technique of Conflict Resolution 254
Sitesh Saraswat
41. Relevance Of Gandhi's Non-Violence For World Peace 262
Anu Rastogi
42. Management of Globalized Economy And Gandhi ji Economic Thought 265
Dushyant Kumar/Sharvan Kumar
43. Gandhian Solutions For Political Social And Economic Crisis 269
Geeta Tyagi

Gandhi Thought about Science and Environment

Neena Batra*

Vandana Agarwal**

Introduction

Mahatma Gandhi was a great revolutionist and a strong supporter of authentic development. The living style of Mahatma Gandhi was a true model of simple living personality which was adoptive to the minimum requirement. We live in a world in which science, technology and development play important roles in changing human destiny. However, over- exploitation of natural resources for the purpose of development leads to serious environmental hazards. In fact, the idea of development is itself controversial in the present situation. In the name of development, we are unethically plundering natural resources. It is true that a science that does not respect nature's needs and a development which does not respect people's needs threatens human survival. The green thoughts of Gandhi give us a new vision to harmonize nature with the needs of people.

Gandhi was not an environmentalist in the modern sense. Although he did not create a green philosophy or write nature poems, he is often described as an "apostle of applied human ecology. His views on nature are scattered throughout his writings. His ideas relating to Satyagraha based on truth and non-violence, simple life style, and development reveal how sustainable development is possible without doing any harm to nature and our fellow beings. His idea that "nature has enough to satisfy every one's needs, but not to satisfy anybody's greed" became one fine ethic to modern environmentalism.

Gandhi's ethical and religious approach to all fellow creatures was founded on an identification with all that lives where it merges with the concerns of the modern deep ecology movement. Gandhi is also often called the father of appropriate technology. He advocated small, local and village-based technology that allowed its users to relate themselves with what they produce. For him technological progress was not a sign of progress. The Charkha represented the ideal technological equipment for Gandhi. A technology that would not replace human labour was what was in his mind.

*Department of Economics, RG (PG) College, Meerut

**Department of Computer Application, RG (PG)College, Meerut

Today's Indian Parliamentary Democracy And Gandhi

Bina Rai*

"The individual has a soul, but as the State is a soulless machine, it can never be weaned from violence to which it owes its very existence."

-Mahatma Gandhi

Introduction:

India came into being in 1947 from the British rule though she is one of the oldest civilizations in the world named the Indus Valley civilization, goes back at least 5,000 years. After independence like many other new born states India also began with a parliamentary democracy. India follows the democratic type of Government. India is a big country and hence needs to be governed in a proper and an effective way.Regarding their parliamentary democracy on March 28, 1957, Prime Minister Nehru said, "We chose this system of parliamentary democracy deliberately; we chose it not only because to some extent, we had always thought on those lines previously, but because we thought it was in keeping with our own old traditions, not the old traditions as they were, but adjusted to the new conditions and new surroundings. We chose it – let us give credit where credit is due – because we approved of it's functioning in other countries, more especially in the United Kingdom."

India has adopted parliamentary form of democracy and the two words – Parliamentary and Democracy are important features of our Political System. The term 'Parliamentary' refers specifically to a kind of democratic polity wherein the supreme power vests in the body of people's representatives called Parliament. The Parliamentary system is one in which the Parliament enjoys a place of primacy in the governance of the State. Under the Constitution of India, the Union Legislature is called 'Parliament'; it is the pivot on which the political system of the country revolves. Democracy implies the right of the people to self-determination and faith in the rationality and ingenuity of the human mind.

Over the past half-century, India has been a complex experiment in institutionalizing democratic accountability through parliamentary institutions. During this period, the country has sustained, against great odds, a lively, stable, multicultural and functioning democracy

*Asst.Prof., Political Science, R.G. (P.G.) College, Meerut

Relevance of Gandhian Thoughts In Modern Time

Rajani Srivastava*

Why Gandhi is relevant in Modern India? What is Gandhian Philosophy? It is the religious and social Ideas adopted and developed by Gandhi Ji, first during his period in South Africa from 1893- 1914, and later of course in India. These ideas have been further developed by later "Gandhian", most notably, in India, Vinoba Bhave and J.P. Outside of India some of the work of, for ex. Martin Luther King Jr. can also be viewed in this light.

The twin cardinal principles of Gandhi's thought are truth and non-violence. It should be remembered that the English word "truth" is an imperfect translation of the Sanskrit 'Satya', and 'non-violence' and even more imperfect translation of "Ahimsa". Derived from "Sat" that which 'exist' – 'satya' contains of dimension of meaning not usually associated by English speaker with the word ''truth". There are other variations, too, which we need not go into here.

Mahatma Gandhi believes that all human activities essentially influencing each other, build ways for a life. In this regard, many philosophies also confirm the belief of Mahatma. Intellectuals are well aware of inter dependent development. This makes life more meaningful and effective for Gandhi, non violence is an active, pure and all timely value. It is the best means to reach the truth. In other word, only through 'Ahimsa' can life be made meaningful.

Mahatma Gandhi was a great philosopher, educationalist and sociologist who led India to Independence and inspired movements for non-violence, civil-rights and freedom across the world. Gandhi being worshipper of non-violence clearly understood that violence is no solution for any problem. As the terrorism and violence are wide-spread in the world today, there seems relevance of Gandhi and his principles everywhere. Similarly Gandhi Ji talked of non-violence everywhere. Gandhi was in favour of using the thoughts against the arms and the arms against the arms, to fight in justice and inequality. He gave an armament to humanity in which there no need to raise arms or make any maze. He believed in changing the society with his thoughts and notwith the power of force. After the heavy destruction of property and life in the World War II, When there was no good in the war, at last in 1945, the United Nations Organization made declaration according to the thought of Gandhi. That was, "War is no solution to any problem

*Asstt. Prof., Sociology Dept.R.G. (P.G.) College, Meerut

Relevance Of Gandhi's Non-Violence For World Peace

Anu Rastogi*

The modern world is facing a multi dimensional crisis, a crisis that poses a challenge to each and every aspect of our life. Among the outstanding aspects of militarization, nuclear proliferation and global reach of arms, crisis in the field of energy, mounting insecurity and violence, terrorism, war and conflicts, besides these are, communalism, regionalism, problems of language, ethical and moral degradation in private and public life. All these together pose a great challenge to the world peace.

Violence destroys mutual cooperation and promotes conflicts which accelerate and give rise to more and newer forms of violence. Violence destroys every form of relationship and it brings agony to oneself and others. So the question indeed is as to how to promote good relationships and how to promote a sense of belonging and consequently human well-being; perhaps only by eradicating violence and its root causes.

In the Gandhi's sense, non-violence or Ahimsa is not a negative concept, it is not mere absence of violence, but a positive state of love; non-hurting the other in thought, worked or deed and love, compassion and altruism towards all. According to Gandhi non-violence (Ahimsa) is a perfect state, it's a goal towards which all mankind moves naturally through unconsciously. If, says Gandhiji, we can manage to apply non-violence successfully at home, it will in its pure state. Ahimsa to Gandhiji is a positive and dynamic force. It has a new connotatoin – a very comprehensive meaning and ideal. It does not simply means the negation of violence or brute force. It means goodwill towards all life – plants, animals, insects, etc. Gandhiji writes, 'In its positive form ahimsa means the largest love and greatest charity. If I am a follower of ahimsa, I must love my enemy. I must apply the same rules to the wrong doer who is my enemy or a stranger to me, as I would do to my wrong-doing father or son. This active ahimsa, necessarily includes truth and fearlessness, it is non-violence only when we love those that hate us. In Gandhiji eye, non-violence is not a weapon of the weak or cowardly. Only the strong and the brave can practise it.

The essence of Ahimsa is 'avoiding injury to anything on earth in thought, word or deed' It is according to Gandhiji, the law of

*Reader & Head, Sociology Dept., R.G. (PG) College , Meerut

NDO-PAK TENSIONS

Conflict or Cooperation?

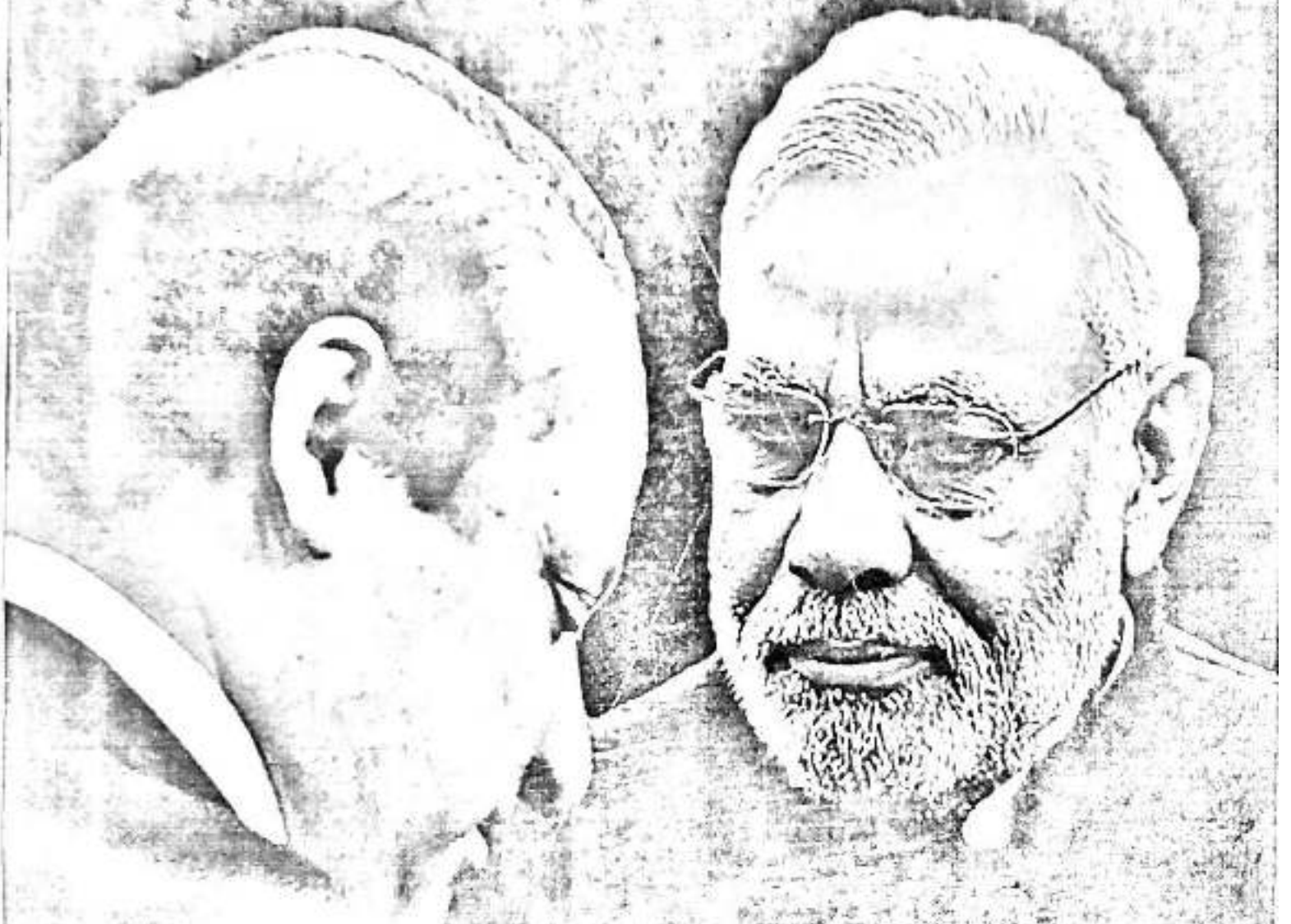

Foreword By :
Lt. Gen. Rajiv Bhalla
PVSM, AVSM, SM,VSM, Military Secretary,
Army HQ, New Delhi

Editor
- DR. SANJAY KUMAR
- DR. ANURAG JAISWAL
- DR. MOHAMMAD SAMIR HUSSAIN

Advance Research Institute for Development of Social Science (ARIDSS), Meerut

Published by
Smt Neelam Batra
G.B. Books
PUBLISHERS & DISTRIBUTORS
4832/24, S-204 Prahlad Lane
Ansari Road, New Delhi-110002
Ph: 09810696999, 011-41002854
E-mail: gbbooks@rediffmail.com

© Authors

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior written permission of the authors and the publishers.

First Published 2016

ISBN: 978-93-83930-32-6

Composing and Printing in India

11. China-Pakistan Nexus in PoK and India's Security Concerns 155
Dr. R.S.Pandey
12. Pakistan-Sponsored Cross-Border Terrorism in J&K 163
Gp. Capt. A.K. Agarwal
13. India's Border Management with Pakistan: An Analysis 172
Col. Sudhakar Tyagi
14. Indo-Pakistan Tensions: Conflict or Cooperation 191
Dr. Sanjay Kumar
15. Indo-Pak Relations : An Overview 202
Dr. Krishna Nand Shukla
16. India, Pakistan and the New Great Game in Afghanistan 217
Md. Afroj & Pratima Koirala
17. India-Pakistan Clash of Geo-Strategic Interest in Central Asia 237
Dr. Mohammad Samir Hussain
18. Cross-Border Terrorism in Kashmir and India's Security 253
Dr. N.P.Singh
19. Indo-Pak Relations: Historic Perspective to New Curvature 264
Dr. Krishna Nand Pandey & Amit Kumar Shukla
20. Pakistan Factor in China-India Equations 288
Dr. Bina Rai
21. CBMs in Indo-Pak Relations 303
Dr. Anurag Jaiswal
22. The Strengthening the Sino-Pakistani Nexus as a Major Strategic Challenge for India 313
Asif Ahmed
23. Indian Approach Towards Pak-Occupied Kashmir 331
Dr. Kapender Singh
24. Ups and Falls of Indo-Pak Relations and the Kashmir Issue 342
Madan Mohan Shukla & Prof. A.P. Shukla
25. Indo-Pak Bilateral Trade Relations 363
Mona Kumari
26. Indo-Pak Relations–Critical Issues and Challenges 374
Dr. Neerja Asthana
27. An Inside View on Lashkar-e-Taiba: Post Mumbai Attacks 384
Dr. Shivendra Shahi

20

Pakistan Factor in China-India Equations

Dr. Nina Rai

Pakistan's congenital enmity with India, which was partly responsible for laying foundations of its unique 'all weather' friendship with communist China–with whom India has had rather complicated equations–has ensured that Pakistan remains one of the most important factors determining the trends and tenor in China-India equations. At the same time though India's own stature has had its influence on these two neighbouring countries and the two have been held in a certain restraint in their anti-India postures. As a result, while their anti-India sentiments may have kept an atheist ruling regime of the People's Republic of China up-and-close to the successive military or civilian rulers of the Islamic republic of Pakistan, their axis have not been able to evolve into an explicit military alliance and India has never been articulated as their 'declared' common enemy. Except for a decade after the 1962 war with China, India has always maintained a dialogue with both of them and managed to minimize the negative influence of Pakistan in determining China-India mutual policies and perceptions.

Also, unlike India-Pakistan equations that have remained rather emotive and complicated, China-India equations have become pragmatic and improved over a period of time thereby restricting the influence of Pakistan in China-India equations. To begin with, China and India were either too euphoric about their brotherhood during the 1950s followed by simply not being on talking terms during the 1960s and early 1970s. Since then, even their piecemeal *rapprochement* during the 1980s and 1990s had been much too tangled in several external and domestic influences. It is only in more recent years therefore that China and India have demonstrated growing understanding of their own and begun to appreciate their limitations. So much so that India has successfully freed herself from the older India-Pakistan hyphenation and strengthened China-India hyphenation, whereas Pakistan has slid into the quagmire of Afghanistan-Pakistan hyphenation. Nevertheless, China and India have also failed to make any major mutual

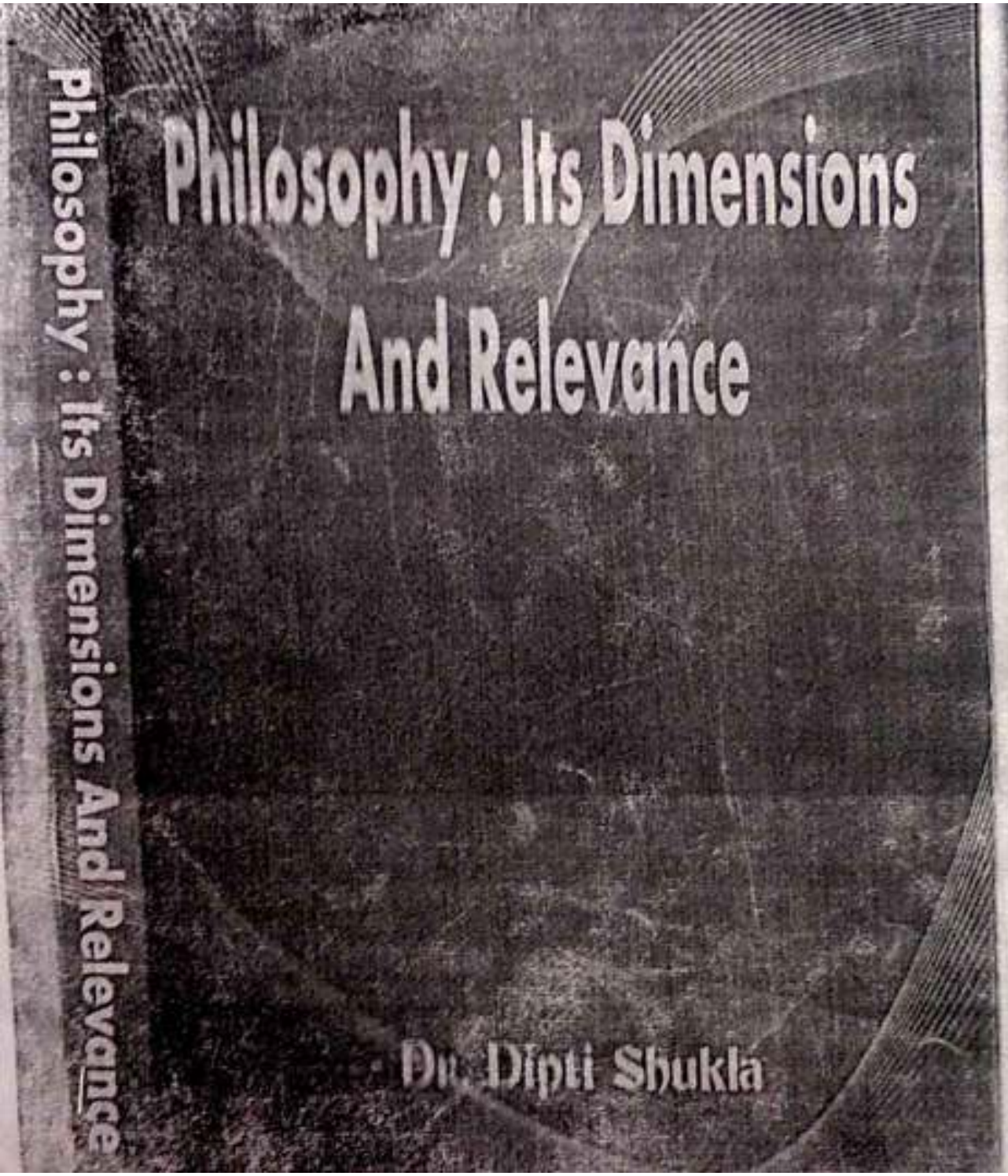

Philosophy : Its Dimensions And Relevance

Philosophy : Its Dimensions And Relevance

Dr. Dipti Shukla

About the book

Philosophy is the pursuit of Truth .It is considered as a branch of knowledge, which has got multi-dimensional approach. Therefore, wherever an academician tries to explore the layers of Reality his approach becomes philosophic. In general, it is a considered that philosophy is related to certain issues only. It has basically spiritual bent but is the search of the ultimate reality as a whole. Present book is an outcome of the deliberations done in national seminar on **Philosophy: Its Dimensions And Relevance** organized by Philosophy Department, R.G.College, Meerut held on 20.11.2015 .

ISBN : 0978-93-82166-45-0

Rs. 300.00

Published By :

ANU BOOKS
SHIVAJI ROAD, NEAR PETROL PUMP, MEERUT

E-mail : jouranal@anubooks.com
anubooksmeerut@hotmail.com
Website : www.anubooks.com
Phone : 0121-2657362

Self Attested
20/09/21

Philosophy: Its Dimensions & Relevance

Published By :
ANU BOOKS, MEERUT
Shivaji Road, Near IBP Petrol Pump, Meerut-250 001
Email: journal@anubooks.com, anubooks@hotmail.com
www.anubooks.com, Ph: 91-01212657362, 9997847837

Published By :
ANU BOOKS, MEERUT

Philosophy: Its Dimensions & Relevance

First Edition : 2016

ISSN: 0978-93-82166-45-0

@ All Rights Reserved

Price : Rs. 300 Only

Printed at:
Bhagwati Press,
Garh Road, Meerut

INDEX

1- **Indian Philosophy in its Proper perspective** 1
Prof. S.R.Bhatt

2- **Spirituality and Chemistry** 17
Dr. Sudha Goyal

3- **A Search for an Ontological Basis of Human Relationality and Education** 22
Vikas Baniwal

4- **Philosophy: Its Dimensions and Relevance** 31
Prof. R.P. Singh

5- **Relevance of Philosophy of J. Krishnamurti** 44
Dr. Anuja Agrawal

6- **Philosophical Dimensions of Education** 49
Dr. Seema Agarwal

7- **Deep Ecology: Buddhist View & Modern Perspective** 58
Dr. Anand Singh

8- **SaCgha and State in Colonial Myanmar: 1886-1948** 70
Ven. Jatila Lankara

9- **Philosophy of Religion** 80
Dr. Shweta Tyagi

10- **Philosophy : Love of Wisdom** 85
Dr. Dipti Shukla

11- **Effect Of Spirituality On Brain And Positive Thinking** 90
Dr. Sunita Singh

12- **Spirituality- Religious And Secular Perspectives** 97
Dr. Madhu Agarwal
13- कला में सौन्दर्य की अवधारणा 101
डॉ0 नाज़िमा इरफान
14- "शिक्षा दर्शन शिक्षा समस्याओं के अध्ययन का दर्पण" 106
श्रीमती आरती शर्मा
डॉ0 सुन्दरीबाला शर्मा
15- "कला का मूल तत्व सौन्दर्य" 109
डॉ0 पूनमलता सिंह
16- सौन्दर्यशास्त्र के सन्दर्भ में 'भारतीय कला' 114
डॉ0 अर्चना रानी
17- कला एवं दर्शन में 'ऐस्थेटिक्स' 121
शबाहत

Philosophy of Religion

Dr. Shweta Tyagi
Lecturer, Dept. of Home Science
R.G (P.G) College, Meerut

The term philosophy is taken from the Greek word phylos meaning to love or to be friend and 'Sophie' meaning wisdom. This philosophy means the love of wisdom. This philosophy means the love of wisdom. Philosophy is the study of the fundamental nature of knowledge, reality and existence especially when considered as an academic discipline. Philosophy is not a way of life". Every person does not have his or her own, Philosophy". Philosophy is not simply a theory about something. Nor is philosophy a belief or a wish. Philosophy is an activity, a quest after wisdom. Philosophy is a particular unique type of thought or style of thinking. Philosophy is not to be confused with its product. Philosophy may be correlated at all to a ''way of life ''is a form of thinking meant to guide action or to prescribe a way of life. The philosophic way of life if there is one, is displayed in a life in which action is held to be best directed when philosophical reflection has provided that direction .Philosophy is an activity people undertake when they seek to understand fundamental truths.

Philosophy is the most critical and comprehensive thought process developed by human beings. It is quite different from religion in that where philosophy is both critical and comprehensive .Religion is comprehensive but not necessarily critical.

Religion attempts to offer a view of all of like and of universe and to answers to most, if not at all, of the most basic and important questions which occur to humans all over the planet. The answers offered by religion are not often subject to the careful scrutiny of reason and logic. Indeed many religions belief defy logic and seen to be unreasonable.

Religion has its basis in belief. Philosophy on the other hand, is a critic of belief and belief systems. Philosophy subject what some would be satisfied in believing to severe examination. Philosophy looks for rational explications and justification for beliefs .Philosophy has its basis in reason. Theology deals with thinking about religious beliefs in a rational manner but it presumes beliefs. Theologians begin with a set of beliefs as foundational or fundamental and are some sense not subject to possible disbelief or to truly critical analysis.

Philosophy of religion according to the standard encyclopedia examination of the central themes and concepts involved in religious traditions .It is an ancient discipline being found in the earliest known manuscript concerning philosophy and relates to many other branches of philosophy and general thought, including metaphysics, logic and history.

As a part of metaphysics. Philosophy of religion has classically been regarded as a part of metaphysics. In Aristotle Metaphysics, the necessarily prior cause of internal motion was an unmoved mover, or of thought, inspires motion without itself being moved. This according to Aristotle is god the subject of study in theology. Now, philosophers have adopted the terms" philosophy of religion" for the subject and typically it is regarded as a separate field of specialization, although it is also still treated by some, particularly catholic philosophers, as a part of metaphysic.

सौन्दर्यशास्त्र के सन्दर्भ में 'भारतीय कला'

डॉ0 अर्चना रानी
विभागाध्यक्ष : ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग,
आर0 जी0 (पीजी) कॉलेज, मेरठ

'सौन्दर्य' शब्द का प्रयोग जितना सामान्य एवं व्यापक है इसका अर्थ उतना ही रहस्यपूर्ण और विवादास्पद है। आजकल कलाकार सौन्दर्य–सर्जक के रूप में ही प्रसिद्ध होना नहीं चाहते। सौन्दर्य कोई सापेक्ष्य तत्व है अथवा कोई निरपेक्ष मूल्य, इस संबंध में भी काफी विवाद है। सौन्दर्य को परिभाषित नहीं किया जा सकता, परिमाण अथवा गुण के आधार पर इसको विश्लेषित नहीं किया जा सकता, अतः इसके फलस्वरूप इसे विज्ञान का आधार भी नहीं बनाया जा सकता।

'सौन्दर्य' वास्तव में एक दार्शनिक प्रत्यय है और सत्य एवं शिव के साथ यह दार्शनिक प्रत्यय का निर्माण करता है। लेकिन दार्शनिक का सौन्दर्य कला–समीक्षक के सौन्दर्य से भिन्न होता है। दार्शनिक के लिये सौन्दर्य एक अमूर्त, निरपेक्ष तत्व है जो व्याख्या अथवा विश्लेषण से परे होता है। लेकिन कला–समीक्षक का सौन्दर्य कला–कृतियों से उद्‌भूत होने के कारण परिभाषित, व्याख्यायित एवं विश्लेषित किया जा सकता है। लेकिन दोनों को एक दूसरे से बिल्कुल अलग किया जा सकता हो ऐसी भी बात नहीं। इनमें एकमात्र अंतर यही होता है कि दार्शनिक एवं कला समीक्षक इन्हें भिन्न उद्देश्यों के लिये प्रयुक्त करते हैं।

भारत में सौन्दर्य के प्रति प्राचीन काल से ही आकर्षण रहा है। वैदिक युग के ऋषियों ने प्रकृति में असीम सौन्दर्य की झलक देखी और उसके प्रति अनेक उद्‌गार प्रकट किये हैं; फिर भी सौन्दर्य–सम्बन्धी शास्त्र का यहाँ नियमित विकास नहीं हुआ। कलात्मक सौन्दर्य का विचार केवल साहित्य–शास्त्र के अनुरूप ही हुआ है और काव्योत्तर कलाएँ उसी को स्वीकार करती रही हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र में वे ही नव चित्र रस माने गये हैं जो काव्य में प्रयुक्त होते हैं। इसका प्रधान कारण यही है कि शास्त्रीय दृष्टि से कलाओं में भाव–सौन्दर्य का ही अधिक विचार हुआ है और भावों की कलागत मान्यता काव्य तथा अन्य कलाओं में एक समान रही है। साहित्य में सौन्दर्य की जो चर्चा हुई है उसी को चित्रकला ने यथावत् ग्रहण कर लिया है।

कला में सौन्दर्य की अवधारणा

डॉ0 नाज़िमा इरफान
प्रवक्ता, चित्रकला विभाग
आर0जी0 पी0जी0 कॉलेज, मेरठ

कला और साहित्य के सन्दर्भ में सौन्दर्य की चर्चा आवश्यक है। सामाजिक जीवन से कलाओं का गहरा रिश्ता है। जीवन को देखने का नजरिया दर्शन कहलाता है। इसी लिए कलाओं में सौन्दर्य बोध की जड़ में दार्शनिक दृष्टियों की निर्णायक भूमिका होती है। पुराने कला चिन्तन की एक विशिष्ट प्रवृत्ति यह है कि वह जाने–अनजाने काव्य या साहित्य के इर्द–गिर्द ही चक्कर काटता रहा। भारतीय कला चिन्तन में ललित कलाओं की उपेक्षा का एक अन्य कारण डॉ0 कुमार विमल ने बताया है–"संस्कृत काव्य शास्त्र में ललित कलाओं के अन्तः संबंध पर कम विचार किये जाने का प्रधान कारण यह है कि यहाँ काव्य की गणना विधा में और कलाओं की गणना उपविधा में की जाती है । इस वर्ग भेद के कारण यहाँ काव्य शास्त्रीय विचारणा में कलाओं के विवेचन को उचित स्थान नहीं मिल सका। पश्चिम में सर्वप्रथम 1735 ई0 में जर्मन कला चिंतक cknexkVsu us, LFksVd (Aesthetic) शब्द का व्यवहार डॉक्टरेट डिग्री के लिए लिखे गये अपने शोध ग्रन्थ में किया । सन् 1750 ई0 में उन्होंने 'ऐस्थेटिक' नाम से एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किया, जिसमें सौन्दर्यशास्त्र को एक विशेष विज्ञान के रूप में विस्तार से व्याख्यायित किया गया। उसके बाद हीगेल क्रोचे से लेकर आधुनिक विदुषी सूजन के0 लैंगर तक अनेक विद्वानों ने इसे समृद्ध किया ।

भारतीय कला चिन्तन में सौन्दर्यशास्त्र आधुनिक युग की घटना है । पिछले 30–35 वर्षों में इस दिशा में अनेक महत्वपूर्ण प्रयास प्रकाश में आये हैं, इसमें भारतीय कलाओं के सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन का मार्ग प्रशस्त हुआ है । सौन्दर्यशास्त्र के जनक बाउमगार्टेन ने इसे एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठापित किया, लेकिन उनका सौन्दर्यशास्त्रीय चिन्तन कला के अतिरिक्त प्रकृति सौन्दर्य को भी अपना विवेचना का विषय मानता रहा। इसका कारण था कि बाउमगार्टेन सौन्दर्यशास्त्र को ऐन्द्रिय संवेदनों का शास्त्र मानते थे। हमारे संवेदनशील ऐन्द्रियबोध का विषय न केवल मानव–निर्मित कलायें हैं, बल्कि

"कला का मूल तत्व सौन्दर्य"

डॉ0 पूनमलता सिंह
प्रवक्ता, चित्रकला विभाग
आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ

भारतीय कला हो या पाश्चात्य कला दोनों का ध्येय ही सौन्दर्य प्रदान करना है। कला में सौन्दर्य निहित रहता है। सौन्दर्य सदैव सबको प्रभावित करता है, जब हम कला की बात करते हैं तो कला के शाब्दिक अर्थ को देखते हैं 'कला' शब्द की उत्पत्ति 'कड्' धातु से मानी गई और उसका सर्वप्रथम प्रमाणिक प्रयोग भरत के नाट्यशास्त्र में मिला। कश्मीरी पंडित क्षेमेन्द्र ने अपने ग्रन्थ 'कला विलास' की रचना की जिसमें उन्होंने तीन सौ कलाओं का उल्लेख किया भारत में कालिदास ने कला को एक आदर्श रूप में देखा व उसके विषय में लिखा –

यदुच्यते पार्वति पापवश्त्तये।
न रूप निव्यव्यभिचार तद्धचः।।

अर्थात् रूप मन में पापवृत्तियों को बढ़ाने के लिये नहीं है अपितु मन की वृत्तियों से कलुष को खींचकर चैतन्य और आनन्दमय स्थिति की ओर ले जाने के लिये है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में भी चित्रकला एवं शिल्प, सौन्दर्य के विषय में विशिष्ट जानकारी मिलती है इसके 35वें अध्याय से लेकर 43वें अध्याय तक को चित्रसूत्र कहा गया है। यह दो भागों में विभक्त है और उसमें कला की विशेष जानकारी दी गई है। नग्नजित् द्वारा रचित चित्रलक्षण में भी कला की उत्पत्ति के विषय में लिखा गया है। इसी प्रकार कला एवं शिल्प से संबंधित वर्णन हमें समरांगण सूत्रधार, मानसोल्लास, पंचदशी तथ अनेकों बौद्ध व जैन ग्रन्थों से भी प्राप्त होता है। भारतीय ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेकानेक विदेशी विचारकों ने भी कला एवं सौन्दर्य और उनके सारतत्वों के विषय में लिखा सुकरात, प्लेटो, अरस्तू सभी ने अपना विचारधारा व्यक्त की है। प्लेटों ने सौन्दर्य को आध्यात्मिक रूप में प्रस्तुत किया उन्होंने कहा कि जिसमें निर्माण की प्रक्रिया हो वही कला है। जिसमें उन्होंने 5 मुख्य कारण बताये जैसे मानव जीवन का अनुकरण, दिव्यता की झलक, सत्य का उदात्त रूप, सौन्दर्य का अंकन, आनन्दानुभूति। उन्होंने

Effect Of Spirituality On Brain And Positive Thinking

Dr. Sunita Singh
Lecturer, Dept. of Psychology
R.G.P.G. College Meerut

Dr. Andrew Newberg (2013), neuroscientist, writes "Everyone philosophizes" in his latest book, "The Metaphysical Mind: Probing the Biology of Philosophical Thought." Philosophy has been considered as the study of general and fundamental nature of reality, existence, knowledge, values, reason, mind and language (Teichmann J. et. al, 1999; Grayling A. C. 1999; Oxford English Dictionary,, 2015). Psychology was once a part of philosophy but it was separated from philosophy due to its reliance on biology and the physical sciences. Philosophy traditionally studied the mind and mental Process but philosophy and psychology began to diverge with the advent of experimental psychology (Quinton A., 1995).

Many people confuse spirituality with religion. Religion is a specific set of organized beliefs and practices, usually shared by a community or group. At the other hand spirituality is more of an individual practice and it has to do with having a sense of peace and purpose. It is also related with the process of developing beliefs around the meaning of life and connection with others.

Several types of spirituality have been identified:

Mystical spirituality: A desire to move beyond the material world, beyond the senses, ego and even beyond time. Authoritarian spirituality: A strong form of spirituality based around a need for definition and rules. Intellectual spirituality: It

"शिक्षा दर्शन शिक्षा समस्याओं के अध्ययन का दर्पण"

श्रीमती आरती शर्मा
प्रवक्ता, बी०एड० विभाग
आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

डॉ० सुन्दरीबाला शर्मा
विभागाध्यक्षा
आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

"जब कभी दर्शन को गम्भीरता से समझा गया है तब सदैव यह धारणा रही है कि इसका अर्थ विद्वता या ज्ञान प्राप्त कर लेना है जो जीवन के मार्ग को प्रभावित करता है।"

दर्शन पद की व्युत्पत्ति दो प्रकार से हुई है – 1. 'जिससे देखा जाए' 'देखा जाये' इस पद का अर्थ 'ज्ञान प्राप्त किया जाए' ज्ञान प्राप्त करने के साधन हैं, प्रत्यक्ष, उपमान, अनुमान आदि लेकिन इन सभ में प्रमुख साधन है, प्रत्यक्ष। 2. 'जो देखा जाए, समझा जाये' वह दर्शन है। अतः दर्शन का अर्थ केवल अन्तर्ज्ञान ही नहीं बल्कि वे समस्त विचारधारायें हैं जो अर्न्तज्ञान से उत्पन्न होने के बाद भी युक्तियों की कसौटी पर प्रमाणित की जाती है।

पाश्चात्य दर्शन के अनुसार दर्शन को "Love Wisdom" ज्ञान से प्रेम है दर्शन वह है जो कि दार्शनिक कहते हैं दर्शन की क्रिया ही दर्शन है जिसमें चिन्तन, समीक्षा तथा विभिन्न दार्शनिक विधियों से दार्शनिक समस्याओं को सुलझाने की प्रक्रिया शामिल है। दार्शनिक अपने अनुभव पर चिन्तन करता है यह चिन्तन समीक्षात्मक होता है।

– सत्यम्, शिवम् एवं अद्वेतम् का समन्वय ही दर्शन है।

– दर्शन यथार्थ के स्वरूप का तार्किक विवेचन है।

– ज्ञान की उस शाखा को जिसमें अन्तिम सत्य (Ultimate Reality) की खोज की जाती है, वही दर्शन है।

– शिक्षा, दर्शन की क्रियात्मक पहलू है, दार्शनिक विश्वास का सक्रिय पहलू तथा जीवन के आदर्शों को वास्तविक रूप देने का क्रियात्मक "साधन" है।

– यह केवल चेतनशील ही नहीं वरन् आयोजित (Deliberate) भी है, शिष्य के विकास में प्रयासरत् है।

Relevance of Philosophy of J. Krishnamurti

Dr. Anuja Agrawal,
Dept. of Education,
R.G.P.G College, Meerut

"The teachings are not something out there in a book; what the teachings say is, 'Look at yourself, go into yourself, inquire into what is there, understand it, go beyond it', and so on. The teachings are only a means of pointing, explaining, but you have to understand, not the teachings, but yourself."

"You are the world, the neighbor, the friend, the so-called enemy. If you would understand, you must first understand yourself, for in you, is the root of all understanding. In you is the beginning and the end."

"If you are very clear, if you are inwardly a light unto yourself, you will never follow anyone"

J. Krishnamurti

Education has been intertwined with philosophy since the period of the Vedas. Philosophy, while permeating religion, art and social structure has influenced the entire cultural fabric including education. In our search for knowledge, in our acquisitive desires, we are losing life, we are blunting the feeling for beauty, the sensitivity to cruelty; we are becoming more and more specialized and less and less integrated. Wisdom cannot be replaced by knowledge, and no amount of explanation, no accumulation of facts, will free man from suffering. Knowledge is necessary, science has its place; but if the mind and heart are suffocated by knowledge, and if the cause of suffering is explained away, life becomes vain and meaningless. And is this not what is happening to most of us? Our education is making us

Philosophical Dimensions of Education

Dr. Seema Agarwal
Dept. of Education,
R.G.P.G College, Meerut

Educators confront philosophical issues on a daily basis, often not recognizing them as such. They tend to deal with these issues unreflectively, perhaps overlooking alternative ways to handle them.

The main concern in this article is to explore the significance and dimensions of Philosophy to resolve these daily issues of education. The focus will be on critical study of various schools of philosophy to uncover criteria that support educational judgments.

As aptly remarked by Gentile "Art of education is incomplete without knowledge of the puzzles of philosophy", Philosophy helps teachers to reflect on key issues and concepts in education, usually through such questions as: What is being educated? What are the aims of education? What is knowledge? What is the nature of learning? And what is teaching? Behind every school and every teacher there is a set of related beliefs—a philosophy of education—that influences what and how students are taught. It represents answers to questions about the purpose of schooling, a teacher's role, and what should be taught and by what methods.

Role of philosophy in Teacher Education Programme

Philosophy of Education in teacher education programme seeks to prepare scholars and practitioners to bring to the world of education a dynamic grasp of how vital is the conjunction "and" that links the enduring concepts philosophy and education.

2015-16

ISBN-978-81-923100-3-9

कला, संस्कृति एवं समाज

Art, Culture and Society

संपादक
डॉ० अर्चना रानी

कला, संस्कृति एवम् समाज
Art, Culture and Society

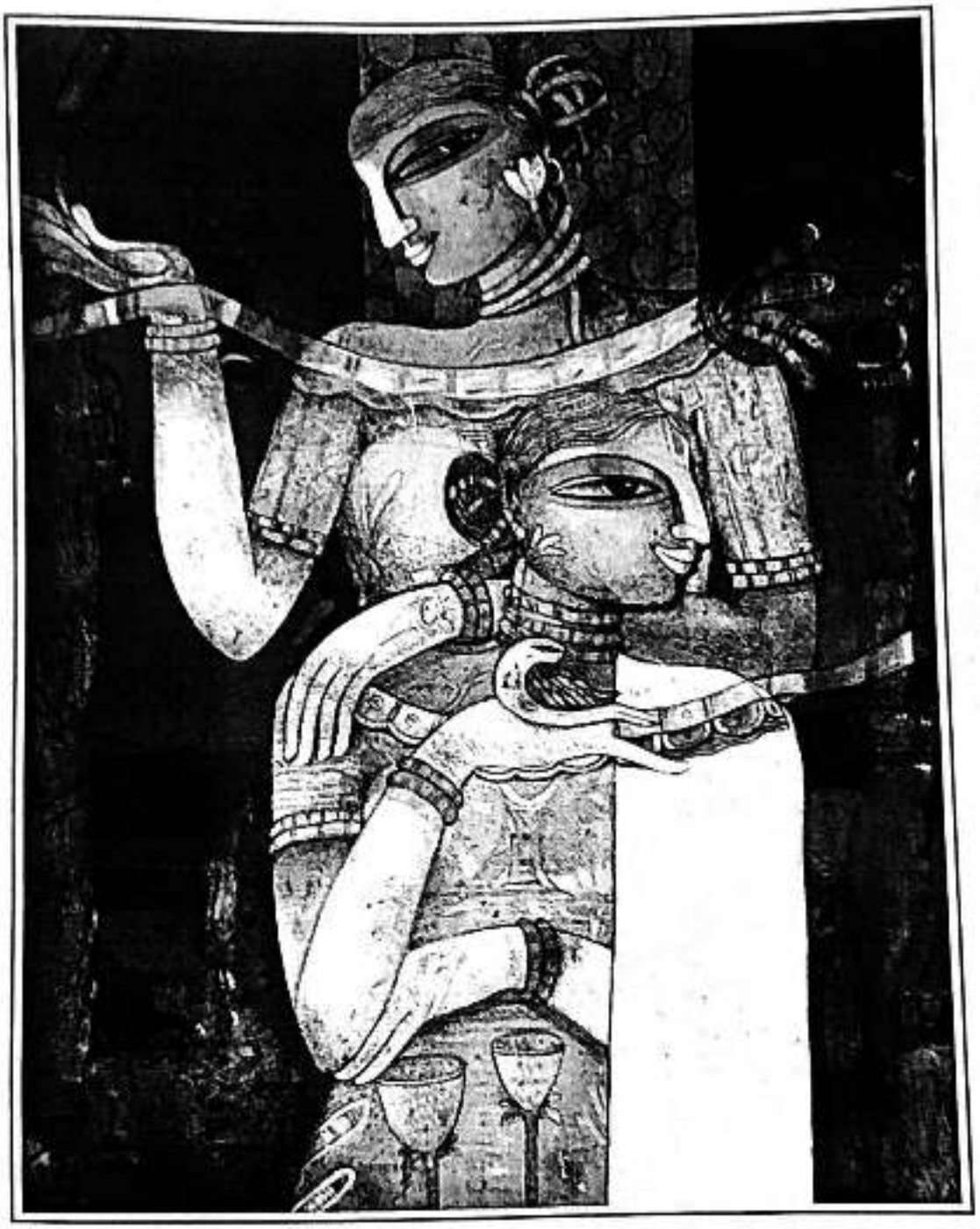

सम्पादक

डॉ० अर्चना रानी

विभागाध्यक्ष

विजुएल आर्ट : ड्राईंग एवं पेंटिंग विभाग,

रघुनाथ गर्ल्स पी० जी० कॉलेज, मेरठ

दूरभाष 0121-4050917 ई-मेल : drarchana.art@gmail.com

कला, संस्कृति एवम् समाज
Art, Culture and Society

सम्पादक - डॉ० अर्चना रानी

ISBN - 978-81-923100-3-9

मूल्य : ₹ 3,200
64 ($20 कोरियर अतिरिक्त)
वर्ष : होलिका दहन 2016
प्रथम संस्करण

सम्पादित पुस्तक पृष्ठ - 336
@ सम्पादक
इस सम्पादित पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों, लेखों में व्यक्त विचार एवं तथ्य स्वयं लेखकों के हैं, उसमें प्रकाशक सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है और उसके लिए प्रकाशक अथवा सम्पादक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं हैं।

प्रकाशक
विजुएल आर्ट : ड्राईंग एवं पेंटिंग विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पी० जी० कॉलेज, मेरठ, उ० प्र०, भारत-250002
(NAAC Reaccreditation C-II 'A' CGPA 3.58)
(College for Excellence)
w : www.rgcollege.com
P : 0121-2642901
F : 0121-2662824

अनुक्रम

अध्याय क्र०सं०	लेखों के नाम	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	कोणार्क का सूर्य मन्दिर : एक कलात्मक विश्लेषण	अशोक कुमार गुप्ता	1
2.	सामाजिक मूल्य और कला	डॉ० दीप्ति शुक्ला	4
3.	टैगोर के चित्र संसार में सामाजिक मानवीय अनुभूतियाँ	शालिनी रानी, डॉ० अन्नपूर्णा शुक्ला	11
4.	श्री राम वी० सुतार की कला यात्रा पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव	डॉ० गीता राणा	22
5.	भारतीय कला और बाजार	डॉ० ऋषिका पाण्डेय	26
6.	कलाभिव्यक्ति : सामाजिक सद्भाव, शांति और समृद्धि	डॉ० अलका आर्य	33
7.	सोलहवीं शताब्दी के चित्रों में कला व सामाजिक गतिविधियों का समन्वय	डॉ० अर्चना	36
8.	जनमानस को आईना दिखाती विज्ञापन कला	डॉ० अर्चना रानी	41
9.	समय एवं समाज का मध्यवर्ती मार्ग : कला	अर्जुन कुमार सिंह	46
10.	कला, कलाकार व समाज	श्री रंजन कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर) डॉ० उमाशंकर प्रसाद (असिस्टेंट प्रोफेसर)	53
11.	भारतीय संस्कृति जीवन के मूल्य	डॉ० ऋचा शर्मा, कु० ऋतु शर्मा	59
12.	फड़ चित्रांकन के पर्याय - श्री श्रीलाल जोशी	डॉ० भावना पंचोली	65
13.	समकालीन सन्दर्भ में कला का प्रयोजन	डॉ० वन्दना शर्मा	69
14.	समाज में लोक कलाओं का वर्चस्व	अमिता शुक्ला	73
15.	समाज से प्रभावित चित्रकार 'सुसहेन्न' जी की कला - एक दृष्टि	डॉ० दीपशिखा	75
16.	कला - शिक्षा - समाज	डॉ० शकुन सिंह	82
17.	कला का सामाजिक परिवेश	डॉ० शालिनी धामा	88
18.	कला चेतना और समाज	डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ	95
19.	समाज में निहित कला	डॉ० सुरभि त्रिपाठी	100
20.	कला में समाज की भूमिका	डॉ० ममता बंसल	102
21.	कला, कलाकार और समाज	डॉ० मृदुल जुनेजा	105
22.	लोक कला और समाज	प्रिया दत्त उपाध्याय	109
23.	सामाजिक जीवन से सम्बन्धित कृतियाँ : एक चर्चा	डॉ० अमित कुमार	112
24.	कलाकार का रचनाक्षेत्र : समाज	डॉ० रेणू कुमारी	121
25.	चित्रकार 'रामकुमार' एवं उनकी सामाजिक कृतियाँ	डॉ० नरेश कुमार प्रजापति	124
26.	पदम श्री एन० एस० बेन्द्रे की कला : समाज का दर्पण	डॉ० रनिका	130
27.	राजा रवि वर्मा की कला : एक सामाजिक दृष्टिकोण	डॉ० बबीता शर्मा	137
28.	हाड़ौती कला परम्परा में तत्कालीन समाज का योगदान	डॉ० निधि शर्मा	142

29.	समाज में कलाकार की महत्वपूर्ण भूमिका	डॉ० श्रीमती आशा पंवार	150
30.	बदलता भारतीय समाज एवं बदलता कला परिदृश्य	अपेक्षा चौधरी	152
31.	समाज में ज्ञान व कला के रंग बिखेरता रज़ा पुस्तकालय	रुचि सक्सेना	154
32.	अतीत को वर्तमान से जोड़ता अल्चर्ट संग्रहालय	रुचि जोशी	161
33.	गुप्तकालीन अजन्ता एवं बाघ गुफा के भित्तिचित्रों में चित्रित सामाजिक परिदृश्य	अनुभा	167
34.	संगीत और पशु-पक्षियों का अंतःसम्बन्ध	डॉ० शिप्रा शर्मा	175
35.	सामाजिक परिप्रेक्ष्य में हथकरघा ग्रामीण महिलाएँ	पंकज रानी	180
36.	सामाजिक संदर्भों की उदासीन फिज़ाएँ : अमृता शेरगिल की कला में	करुणा, डॉ० अन्नपूर्णा शुक्ला	186
37.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उत्तरकाशी हस्तशिल्प कलाकारों की भूमिका	कु० गंगोत्री	196
38.	किरन सोनी गुप्ता के चित्रों का सामाजिक परिदृश्य	कोमल	202
39.	रागमाला चित्रण में ऋतुओं का सौन्दर्य	रश्मि वर्मा	207
40.	आधुनिक भारतीय कला समीक्षा में प्रयाग शुक्ल का योगदान	प्रीति रानी	212
41.	सामाजिक विचारधारा के सुष्टा व दृष्टा लालचन्द मारोठिया	पारुल बापलावत	219
42.	कला और समज का अनन्य सम्बन्ध	कु० सविता	225
43.	कला और समाज का अस्तित्व	कु० कविता	230
44.	समाज की अमूल्य धरोहर : कला	डॉ० मीनाक्षी	234
45.	समाज से प्रभावित कला	शबाहत	236
46.	उत्तर प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक स्थल	डॉ० विनीता देवी	241
47.	समाज की अमर धरोहर भारतीय कला	डॉ० सुप्रिया यादव	248
48.	कला के विभिन्न रूप एवं कलाकार : सामाजिक परिदृश्य में	पिंकी शर्मा	253
49.	समकालीन समाज का प्रतिबिम्ब : लोक कलायें	डॉ० नीलिमा गुप्ता	259
50.	सामाजिक जनजागृति हेतु 'प्रेरणा' के शैक्षिक प्रयास : एक गुणात्मक अध्ययन	श्रीमती राजू देवी, डॉ० मुरलीधर मिश्रा	268
51.	कला और समाज का अन्त : सम्बन्ध	एकता दाधीच	275
52.	नन्दलाल बोस के चित्रों में समाज का वृहद स्वरुप	डॉ० नाजिमा इरफान	278
53.	कला और समाज	डॉ० प्रेमलता कश्यप	288
54.	मुगल समजा में वस्त्र विन्यास अकबर, जहाँगीर के संदर्भ में	डॉ० अर्चना चौहान	291
55.	जन कला - एक संक्षिप्त विश्लेषण	डॉ० पूनम लता सिंह	297
56.	Art, Morality and Role of Society	Dr. Jaspal S	301
57.	Role of Tribal, Fold Art in Society with special reference to Gond Tribal Art of Madhya Pradesh	Dr. Kumkum Bharadwaj & Anu Ukande	306
58.	An Immortal Art of Textiles- Ikat & Tie & Dye	Mrs. Reeta Ghosh	316
59.	ART : A true reflection of human behaviour	Dr. Alka Chadha	321
60.	Art makes society : an introductory visual essay	Vibha Lodhi	326

जनमानस को आईना दिखाती विज्ञापन कला

डॉ. अर्चना रानी
विभागाध्यक्ष : ड्राईंग एवं पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पीजी) कॉलेज, मेरठ।

व्यक्ति समाज से बना है और समाज जनमानस समूह से। सामान्य रूप में 'जनमानस' का अर्थ व्यक्तियों के समूह से है। वस्तुतः समाज एक अमूर्त शब्द है जो व्यक्तियों के मध्य या जनमानस के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों की जटिलता को प्रकट करता है' या यूँ कहें कि 'समाज' कार्य प्रणालियों एवं रीतियों को जनमानस के समूह विभाजन द्वारा पारस्परिक सहयोग की एक व्यवस्था है। मानव के विकास के साथ समाज की भी व्यवस्था बनी। मानव के समूह को 'जनमानस' की संज्ञा दी गयी किन्तु, समाज केवल मानवों की भीड़ से ही नहीं बनता, वरन् उसमें सामाजिक मूल्य, विश्वास, संस्कार एवं विचार जैसे महत्वपूर्ण तत्व भी होते हैं। समाज की पहचान उसकी मौलिक एवं विशिष्ट संस्कृति से होती है और किसी भी संस्कृति का पोषण कलायें ही करती हैं। इस प्रकार कला और समाज अभिन्न हैं तथा एक का दूसरे पर अपना अस्तित्व है।'

आज समाज में जहाँ प्रत्येक क्षेत्र प्रगति पथ पर अग्रसर है, नित–नवीन रूप एवं तकनीक व्यक्ति के कार्यों को और परिष्कृत कर रहे हैं तो ऐसे में कला को किसी बन्धन या सीमा में बाँधकर कैसे रखा जा सकता है। कला द्वारा कलाकार किसी भी अनुभव को आकर्षक एवं ओजपूर्ण बना देता हैं। जिसे निरख दर्शकगण मन्त्रमुग्ध हो जाता है। समाज में संप्रेषण के लिये कलाकार की भूमिका एवं कला का कार्य महत्वपूर्ण होता है। कला न केवल मानव को ऐन्द्रिक सुख प्रदान करती है, वरन् वह समाज के सम्मुख कुछ आदर्श, सामाजिक चेतना को प्रतीकों द्वारा व्यक्त करती है जो किसी समाज विशेष के लिये महत्वपूर्ण होते हैं।' वस्तुतः कला समाज के निर्माण एवं उत्थान में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। कला तो सम्पूर्ण जन समुदाय के लिये कल्याणकारी, मंगलकारी तथा आदर्शवादी होती है। कला अपने अनेक स्वरूप यथा– जनकला, विज्ञापन एवं पोस्टर कला से समाज को दिशा प्रदान करती है। इस प्रकार कलाकार समाज के मध्य रहने वाला वह व्यक्ति है जो उनके मध्य रहकर उन्हें संदेश देता है। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचन्द की कहानियाँ, कबीर के दोहे, अजन्ता के चित्र, एलोरा के शिल्प, तुलसी के दोहे सभी ऐसे साक्ष्य हैं जिन्होंने अपने समय के समाज को सही दिशा प्रदान की।'

आज कला किसी भी अनुभव को सजीव रूप प्रदान कर उसे इतना आकर्षक एवं ओजपूर्ण बन देना देती है कि दर्शक मन्त्रमुग्ध हो जाते है। कलाकार अपनी तकनीक, शैली व अपनी दिव्य दृष्टि से कृति को इतना आकर्षक बना देता है कि उस पर जाकर ही प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि टिकती है, उसे देशकर दर्शक को अवर्णनीय व अकथनीय सुख तथा आनन्द की प्राप्ति होती है। यही समानता हमें व्यावहारिक कला में भी देखने को मिलती है। रचनात्मक अभिव्यक्ति की जितनी सम्भावनाएँ इस क्षेत्र में हैं उतनी दृश्य कला के अन्य क्षेत्रों में शायद ही देखने को मिले। विषय चाहे व्यवसाय का हो या जनहित के कार्य का, सभी के सन्देश जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए व्यावहारिक कला एक महत्वपूर्ण साधन हैं। सर्वप्रथम अगर हम विज्ञापन के विषय में बात करें तो विज्ञापन का अर्थ कुछ उत्पाद या सेवा का एक सार्वजनिक संवर्धन है। आज के युग में विज्ञापन का अपना एक अलग स्थान है। टाई, रूमाल से लेकर व्यक्ति की प्रत्येक जरूरतमंद वस्तु विज्ञापित हो रही है। विज्ञापन अपने छोटी सी संरचना में बहुत कुछ समाये हुए होता है। विज्ञापन 'गागर में सागर' के समान होता है जो बहुत कम बोलकर बहुत अधिक कह जाने की क्षमता रखता है। यदि विज्ञापनों के इस महत्वपूर्ण गुणों को प्रत्येक व्यक्ति समझने लगे तो अधिकांश विज्ञापन हमारे सामने कोई आकर्षण अस्त्र मात्र न रहकर कला के श्रेष्ठ नमूनों के रूप में उभर कर आयेंगे।

नन्दलाल बोस के चित्रों में समाज का वृहद स्वरूप

डॉ० नाजिमा इरफान
प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ।

कलाकार की कृतियों से उसके व्यक्तित्व को पहचाना जा सकता है। जिस कोरे मनोमस्तिष्क पर भारत की संस्कृति की अमिट छाप थी, उस सहृदय के मालिक थे– नन्दलाल बोस। उन्होंने अपनी कला को इतना अधिक सहज, सरल, सुन्दर और आकर्षक बनाने का प्रयास किया था कि वे किसी भी वर्ग व किसी भी उम्र के व्यक्ति को आकर्षित कर सकें। उनकी कला आडम्बरों– से परे सीधी–सच्ची रेखाओं व रंगों से पूरित थी। समकालीन कला के दायरे में हम उनकी कला को चित्रकला के नियमों की अपेक्षा किसी मासूम की सहजता एवं रंगों में शुद्धता और उत्साही अभिव्यक्ति के समीप आँकते हैं। उन्हें अपनी कला पर पूर्ण विश्वास था कि वह समाज के प्रत्येक वर्ग एवं काल में उत्साहपूर्वक पसन्द की जायेगी। उनका विचार था कि जो भी कलाकार अपनी संस्कृति के पूर्ण ज्ञान से जो रचना करता है वही एक अच्छा कलाकार होता है। नन्दलाल बोस की कला में भारतीय जन–जीवन के प्रति एक विशेष लगाव एवं समर्पण दिखाई देता है।

विनोद बिहारी मुखर्जी का मानना था कि नन्दलाल बोस ने राष्ट्रीयता में अपने को कला के द्वारा अभिव्यक्त किया, ऐसा अवनीन्द्रनाथ के अन्य शिष्यों में दिखाई नहीं देता। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय कला के मानदंडों एवं समकालीन कला और जीवन के सामंजस्य का प्रयास किया।

नन्दलाल बोस की चित्रावली में हमें जीवन का बहुमुखी चित्रण देखने को मिलता है। आपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को टटोलकर देखा है। नन्दलाल बोस ने अपनी कलाकृतियों को सभी प्रकार की रुचि रखने वाले वर्गों के लिये आकर्षक बना दिया है। आपकी अपनी कृतियों में हर प्रकार की अभिव्यक्ति के पीछे जीवन का वृहद रूप छिपा हुआ है, जिसकी परिणति आध्यात्मिक उन्नयन में जाकर हुई है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की शिष्य मण्डली के प्रमुख साधक नन्दलाल बोस थे। वे कलाकार और विचारक दोनों थे। उनके व्यक्तित्व में कलाकार और तपस्वी का अद्भूत सम्मिश्रण था। चिन्तन के क्षणों में उन्होंने जो कुछ कहा या लिखा था, उसका उतना ही महत्व है जितना उनके चित्रों का है।[1]

नन्दलाल बोस ने भारतीय कला परम्पराओं का गहरा अध्ययन किया था और उन्होंने अपनी प्रेरणा से कला को सार्वदेशिक बनाया था। उनकी कला की सामर्थ्य उनके रेखांकनों में दिखायी देती है, जो चित्रकला की अपेक्षा भारतीय मूर्तिकला और स्थापत्य कला से अधिक प्रभावित है। नन्दलाल बोस अपने स्वभाव से प्रयोगधर्मी कलाकार थे।[2]

प्रयोगधर्मी कलाकार होने के बावजूद उन्हें अपनी परम्परा में रहना ही अधिक प्रिय था। अपनी पारम्परिक पद्धतियों का गहरा अध्ययन कर उन्होंने अपनी कला को ऐसी सजीवता देने की सफल चेष्टा की जिससे परम्परा के

जन कला - एक संक्षिप्त विश्लेषण

डॉ० पूनम लता सिंह
प्रवक्ता, चित्रकला विभाग, आर० जी० (पी० जी०) कॉलिज, मेरठ।

कला क्या है? कला क्यों है? कला का भविष्य क्या होगा? ये सभी बिन्दु सदैव चर्चा में आते रहे हैं। यदि मनुष्य का अस्तित्व है तो कला का अस्तित्व है, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। कलाकार कला सृजन करता रहा है, कभी अपने आश्रयदाता के लिये, कभी धर्म के लिये, कभी अपने लिये और कभी जन के लिये। कला सदैव जन के लिये ही होती है। साधारण जन तक अपनी बात पहुँचाने के लिये कला का सहारा सदैव पूरे विश्व में लिया जाता रहा है। इसका एक उदाहरण यदि अजंता की चित्रकला है तो उसका ही प्रत्यक्ष प्रमाण आरंभिक ईसाई कला रही है। भारतीय कला का इतिहास जब हम देखते हैं तो हमें ज्ञात होता है और हम यह कह सकते हैं कि कला का आनन्द एक समय तक सिर्फ राजाओं, राजपरिवारों व सामन्तों तक ही सीमित रहा है परन्तु राजा रवि वर्मा की ओलियोग्राफ प्रेस द्वारा निर्मित चित्रों के प्रिंट ने उसे सामन्ती राज परिवारों से निकालकर साधारण जन–जन तक पहुँचाया। स्वतंत्रता के पश्चात कला में गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर के प्रयत्नों से भारतीय कला में एक नवीन अध्याय जुड़ा और कलाकार कला में स्वयं की अभिव्यक्ति करने की प्रवृत्ति अपनाकर अपने निजी पथ पर चल पड़ा। कलाकारों ने पाश्चात्य कलाओं का अनुकरण किया और अमूर्तन से लेकर अनेकानेक विधाओं को अपनाना आरंभ किया। आज कला में चित्र, मूर्ति, संस्थापन, कम्प्यूटर आर्ट व डिजिटलाईजेशन का युग है, कहने का तात्पर्य यह है कि आज कला स्वतंत्र है तथा कलाकार भी स्वतंत्र है।

समकालीन भारतीय कला पर यदि दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि आज कलाकारों का यह प्रयत्न है कि कला पर अभिजात्य वर्ग का अधिपत्य समाप्त हो और वह जन–जन तक पहुँचे। आज भारत के अनेक छोटे–बड़े शहरों में कला संग्रहालय है, कला वीथिकाएँ हैं और तमाम छोटे–बड़े कलाकार उनमें अपनी कृतियाँ प्रदर्शित कर रहे हैं।

कलाकृतियों का आयोजन–प्रदर्शन करने के लिये सार्वजनिक स्थलों का चयन कलाकार करने लगे हैं जिससे आम जनता के लिये भी उसका दर्शन सहज व सुलभ बन सके। कला रसिकों के साथ–साथ आम जनता भी उसका आनन्द उठाए। यह प्रयत्न आजकल के कलाकार करने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। हमारी प्रचलित नवीन कला विधा 'संस्थापन' में तो कलाकार उसका सृजन इस प्रकार के मैटिरियल्स से करते हैं कि वह प्रदर्शन के स्थान पर स्वयं ही समय के साथ–साथ नष्ट हो जाए।

आज के परिवेश में कलाकार कला का प्रयोग केवल आनन्द प्राप्ति के उद्देश्य को सामने रखकर नहीं कर रहा है अपितु उसके उद्देश्य का विस्तार हो गया है, आज कलाकार राजनैतिक, सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य भी अपनी कला के माध्यम से कर रहा है और उसे अपनी बात को जन–जन तक पहुँचाना है जिसके लिये उसने कला वीथिकाओं से निकलकर नगरों के चौराहे, रेलवे–स्टेशन, मॉल व नगर की दीवारों, फुटपाथों, नगर के पार्क एवं स्कूल–कॉलिज को अपनी कला के लिये चुन लिया है। कला में इतनी शक्ति होती है कि वह व्यक्ति के मर्म को छूकर उसकी संवेदनशीलता को जागृत कर देती है। इसी कारण आज न केवल कलाकार वरन् भारतीय सरकार व सरकार की सहायता से चलने वाले NGO एवं अनेक समाजसेवी संस्थाएँ भी सामाजिक जनजागृति के लिये कला का आश्रय ले रहे हैं, तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री द्वारा चलाये गए 'स्वच्छ भारत अभियान' के लिये जगह–जगह

सामाजिक मूल्य और कला

डॉ० दीप्ति शुक्ला
एसो० प्रोफेसर : दर्शनशास्त्र विभाग, आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह सामान्य परिस्थिति में न तो एकाकी रहता है और न ही रहना रुचिकर मानता है। यही कारण है कि वह बन्धु, बांधव, परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त ऐसे साथियों के साथ भी रहता है जो कुल मिलाकर समाज की परिभाषा में समाहित होते हैं। साथ मिलकर रहने में सहकार, सहयोग और सहभागिता भी सम्मिलित है। इस स्थिति में कुछ ऐसा होता है जो सार्वजनिक हित के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह साथ रहने की प्रथम शर्त है।

यद्यपि यह भी एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अनोखा और एकमात्र होता है। सामान्यतः कोई दो व्यक्ति समान लक्षण, स्तर, गुण और विशेषताओं के नहीं हो सकते। उसका यही वैशिष्ट्य उसके स्वरूप का अनिवार्य अंग है। यही उसे 'मनुष्य' बनाता है। तथापि समाज के सदस्य के रूप में उसमें एक विशेष प्रकार की समानता होना भी अनिवार्य है अन्यथा एक–दूसरे के प्रति आदर और सम्भाव स्थापित नहीं हो सकेगा। जहाँ उसकी विशिष्टता अनिवार्य है वहीं समानता का अंश भी आवश्यक है। कुल मिलाकर समाज के प्रत्यय के अन्तर्गत ये दोनों ही पक्ष महत्वपूर्ण हैं।

समाज की परिभाषा

समाज शास्त्रियों ने समाज के अनेक दृष्टिकोणों से विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं जिनमें विभिन्न पक्षों को महत्व दिया गया है। जिनमें से प्रमुख रूप में हम इन्हें समाज की व्याख्या के लिए स्वीकार कर सकते हैं :

गिडिंग्स ने समाज को परिभाषित करते हुए माना कि समाज एक संगठन है और व्यवहार का एक योग है जिसमें सहयोग देने वाले व्यक्ति एक–दूसरे से सम्बन्धित होते हैं।[1] इस प्रकार समाज सामाजिक सम्बन्धों पर आश्रित व्यवस्था है जिसमें तीन स्तरों पर सम्बन्ध स्वीकार किए जाते हैं। प्रथम– एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से सम्बन्ध, दूसरा– एक व्यक्ति का उसके समूह से सम्बन्ध, तीसरा– एक समूह का दूसरे समूह से सम्बन्ध अर्थात् कुल मिलाकर समाज मानवीय जीवन का एक ऐसा ताना बाना है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है तथा प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से जुड़ा है। यह जुड़ाव केवल बाह्य न होकर आन्तरिक भी है। यह सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है।" समाज केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं है बल्कि समूह में रहने वाले मनुष्यों के जो आपसी सम्बन्ध हैं उन सम्बन्धों के व्यवस्थित स्वरूप को समाज कहते हैं।[2]

समाज के प्रत्यय में कुछ तत्व स्वीकार करने आवश्यक हैं। समाज केवल मनुष्यों का समूह मात्र नहीं है अपितु यह पारस्परिक सम्बन्धों पर आधारित समूह है जहाँ एक–दूसरे की उपस्थिति, एक–दूसरे के प्रति अभिज्ञता आवश्यक है। यही कारण है कि इसमें एक प्रकार की समरूपता होती है। यह सम्बन्ध समान हितों और समान उद्देश्यों पर आधारित होता है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन को प्रभावित करता है। इसलिए इन सम्बन्धों में अन्योन्याश्रितता और पारस्परिक सहकारिता का भाव स्वीकार किया जाता है। व्यक्ति का जीवन बिना पारस्परिक सहयोग के सम्भव तो है किन्तु रसहीन है, उद्देश्यहीन है अस्तु, निरर्थक है। सम्भवतः यही कारण है कि मनुष्य ने सामाजिक निर्भरता का प्रत्यय (Concept of Social Dependency) स्वीकार किया होगा।

PERSPECTIVE OF KNOWLEDGE

(A Bunch of Thoughts)

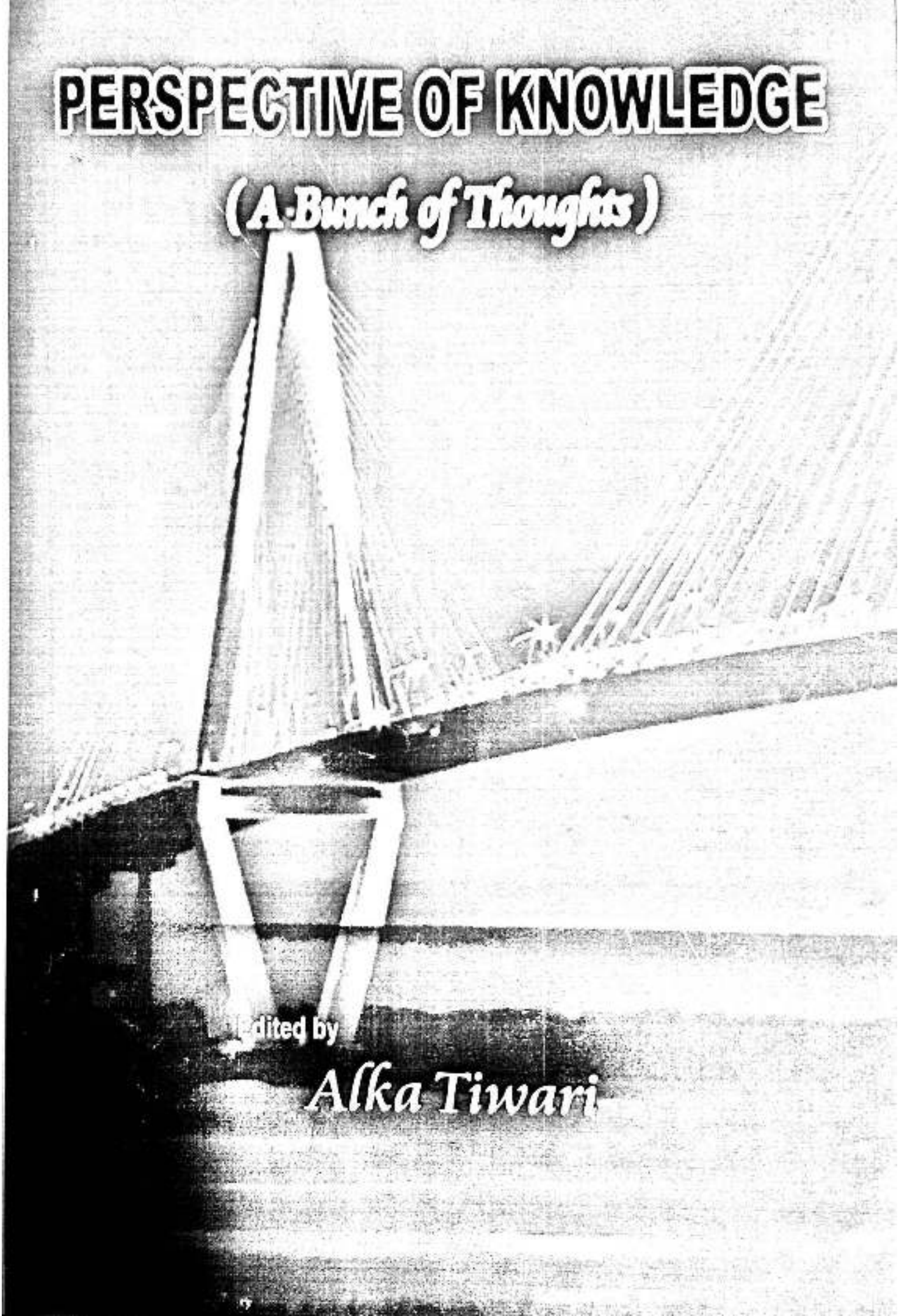

Edited by

Alka Tiwari

☐ **Published By :**

Mansi Prakashan

56 B/2, Kailash Puri

Meerut–250002 (U.P.)

Mob. : 9152775272, 9897426021

☐ **© Editor**

☐ **First Edition :** 2016

☐ **Price :** ₹ 450.00

$ 10.95

£ 8.95

☐ **ISBN No. 81-85494-44-4**

☐ **Computer Setting**

NICE COMPUTER

11. **Dr. Purnima Vashishtha,**
C.C.S. University, Meerut.

12. **Dr. Mamta Sagar/Dr. Uma Shankar Prasad,**
S.M.P. Girls P.G. College, Meerut.

13. **Dr. Shalini,**
C.C.S. University Meerut.

14. **Dr. Archana Rani,**
R.G. College, Meerut.

15. **Dr. Himanshu Agarwal,**
D.N. (P.G.) College Meerut.

16. **Richa Jain,**
J.K.P. (P.G.) College, Muzaffar Nagar.

17. **Vijayata Bhamri,**
Jamia Millia Islamia University, Delhi.

18. **Babita Pundir,**
C.P.E. Meerut.

19. **Shazia Ahmad**

20. **Dr. Aruna Sharma**

Indian Cultural & Traditional Value In Miniature Paintings

Dr. Archana Rani

India is a land rich with art, tradition and culture. Most people, especially those living in the rural sector of India, practically make a livelihood by practicing various forms of arts and crafts. In fact, glimpses of art and craft can be seen in every aspect of Indian life. India is most concentrated with small cottage industries. Here, people create attractive artistic pieces from the most basic and rudimentary materials that are available to them. This simplicity and rawness of these creations is also what makes them it most appealing to the general masses glancing on these two topics Culture and Tradition, it seems same but they are different quality and carry the different significance. Culture is related with our soul and tradition is related with our heart. Culture is the inheritance of getting the dynasty tradition etc. but tradition is the taking and learning process. In this perspective, art can

शिवरंजनी

शोध पत्रिका – 2016
(तृतीय संस्करण)

सरगम मन्दिर (रजि०), दिल्ली
संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली
आई.सी.सी.आर., नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

1.	सुनो नारियों	डॉ. मधुर लता भट्टनागर	1
2.	विज्ञान और संगीत	डॉ. मधुर लता भट्टनागर	2
3.	Depiction of Female in Indian Classical Art	Dr. Kiran Pradeep	4
4.	The Importance of Art and music in Child Development	Dr. Manju Gupta	8
5.	मीराबाई के काव्य में सांगीतिक तत्व	डॉ0 किरन शर्मा	10
6.	संगीत एवं ललित कलाओं में नारी की बढ़ती प्रतिभागिता (प्राचीन, मध्य एवं वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में)	श्रीमती सुमनलता	12
7.	SITARA DEVI : A shinning star in the sky of Indian Classical Dance Kathak	Dr. Bhawna Grover Dua	17
8.	भारतीय संगीत एवं आधुनिक नारी संगीतज्ञ	डॉ0 निधि शर्मा	21
9.	संगीत कला से नारी का सम्बन्ध	डॉ0 निमि शर्मा	24
10.	दक्षिण भारतीय संगीत की कोकिल गानम एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी	आकाँक्षा सारस्वत	26
11.	बनारसी ठुमरी का पर्याय श्रीमती गिरिजा देवी	सर्वजीत कौर	28
12.	"गायन वादन व नृत्य कला की भारतीय महिला नवरत्न" (आधुनिक काल के परिप्रेक्षय में)	Neha Salvan	30
13.	संगीत में नारी की भूमिका	पंकज चोपड़ा	35
14.	किराना घराने की मशहूर गायिका हीराबाई बड़ौदकर जी का भारतीय संगीत में योगदान–शोध पत्र	नेहा त्रिपाठी	40
15.	मेरठ, उत्तर प्रदेश के कार्यरत दो महिला कलाकार– डॉ. किरण प्रदीप कौशिक, डॉ. वन्दना शर्मा	निकिता जैन सिंघल	42
16.	"वीरबाला भावसार की रचना–धार्मिता: विश्लेषणात्मक अध्ययन"	प्रेरणा चौधरी	44
17.	नारी और संगीत	कु० शिप्रा जैन	47
18.	भारतीय कला की एक शक्ति – अमृता शेरगिल	पूजा मोहन	50
19.	ठुमरी एक स्त्रियोचित गीत विधा	निधि	53
20.	स्त्रीयोचित गायकी ठुमरी एवं श्रीमती सविता देवी का संघर्ष	मानवी जैन	56
21.	"लोक संगीत की सशक्त संवाहक – 'नारी' "	वन्दना शर्मा	60
22.	संगीत जगत में नारी का योगदान	श्रीमति दिव्या शर्मा	62
23.	संगीत में नारी की भूमिका	श्रीमति बीनू टण्डन	64
24.	भारतीय संगीत समाज की सशक्त महिलायें व संगीत में उनका योगदान	कु0 अनुभा गुप्ता	65
25.	Gender Justice in India	Dr. Shivali Agarwal	66

मीराबाई के काव्य में सांगीतिक तत्व

डॉ0 किरन शर्मा
प्रवक्ता (संगीत)
आर0जी0पी0जी0 कॉलेज, मेरठ

मध्यकालीन भारतीय संगीत में विदुषी गायिका के रूप में मीराबाई का नाम अमर है। मीराबाई का सम्पूर्ण जीवन संगीत की रसधारा से ओतप्रोत रहा है। यद्यपि भारतीय संगीत जगत में किसी भी युग में पुरुष संगीतज्ञों की कोई न्यूनता नहीं। भरत शारंगदेव से लेकर आधुनिक काल में पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे तक अनेकानेक संगीतज्ञ हुए हैं। किन्तु आश्चर्यजनक रूप से स्त्री संगीतज्ञों का आधुनिक काल की अपेक्षा प्राचीन काल एवं मध्य काल में अभाव सा दिखाई पड़ता है। इन दोनों कालों के मध्य हमें स्त्री संगीतज्ञों में एक मीराबाई का ही नाम दिखाई पड़ता है जो भक्ति काव्य तथा संगीत में प्रसिद्ध है।

मीरा का जीवन संगीत के प्रति समर्पित था उनका जन्म राजस्थान में जोधपुर के राजघराने में हुआ था। जहाँ संगीतमय वातावरण था। राजघराने में उन्हें बाल्यकाल से ही संगीत जैसी ललित कलाओं के संस्कार स्वतः ही प्राप्त हो गए थे। वैष्णव कुल में उत्पन्न होने के कारण भगवद्भक्ति में भी उनकी परम आस्था थी।

यद्यपि मीरा का जन्म उस काल में हुआ था जब भारतीय संगीत अपने स्वर्ण युग में था। एक तरफ अकबर के दरबार में तानसेन, बैजू, गोपाल नायक आदि जैसे महान संगीतज्ञ अपने संगीत की सुधारस से जनमानस का रहे थे तो दूसरी तरफ सूरदास, तुलसीदास तथा मीराबाई जैसे कवि संगीतज्ञ अपने भक्ति बिखेर रहे थे। मध्यकाल में भारतीय संगीत के इस भक्तिमय आध्यात्मिक स्वरूप की उन्नति में मीरा के संगीतमय पदों का बड़ा योगदान रहा है।

मीरा का विवाह राजस्थान में मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश में हुआ था। जो संगीत के अनन्य उपासक महाराणा कुम्भा के कारण विख्यात था। वे स्वयं संगीत के बड़े ज्ञाता थे। उन्होंने संगीत पर अनेक ग्रंथ लिखे तथा 'संगीत रत्नाकर' एवं 'गीत गोविन्द' जैसे विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ पर टीका भी लिखी थी। यद्यपि सिसोदिया राजवंश स्वयं ही संगीतमय वातावरण से ओत प्रोत था किन्तु उन्हें मीरा का श्रीकृष्ण प्रेममय होकर हाथ में करताल गले में तम्बूरा तथा पैरों में घुंघरू बाँधकर आम जनमानस के मध्य कृष्णमय कीर्तन करना पसंद नहीं आया इसे राजकुल की शोभा के विपरीत समझा गया शायद यही कारण था कि कृष्ण की अनन्यभक्त मीरा को घरबार छोड़ना पड़ा। अपने घर एवं समाज दोनों से पीड़ा सहने के बाद उन्होंने अपने आपको भगवद् भक्ति में समर्पित कर दिया। उनके पदों में विरह वेदना की अनुभूति की अभिव्यक्ति के साक्षात् सौन्दर्य की झलक है।

मीरा के पदों में व्याप्त संगीतात्मकता

भक्तिकालीन कवियों का संगीत से घनिष्ठ संबंध रहा है। संगीत गीति काव्य का प्रमुख तत्व है। हमारा संगीत प्रारम्भ से ही आध्यात्मिकता से प्रेरित रहा है तथा भक्ति और आध्यात्मिकता एक दूसरे के पर्याय है। इसी भक्ति की अभिव्यक्ति जब संगीत के स्वरों के माध्यम से हुई तब मानव हृदय को रस के अथाह सागर की अनुभूति हुई। संगीत के अभाव में गीत का सौंदर्य प्रभावहीन हो जाता है। यदि संगीत की दृष्टि से देखें तो मीरा साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। मीरा का काल संगीत एवं साहित्य दोनों का स्वर्ण युग कहा जाता है। मीरा ने अपने पदों में विविध राग रागिनियों का प्रयोग किया किया है जैसे मल्हार, तिलक, श्याम, हमीर, कल्याण, काफी, पीलू, मुल्तानी, मधुमाद सारंग, केदार, कामोद, मालकोश, खमाज, आदि। उन्होंने अपने पद में विषयानुकूल ही विविध रागों का प्रयोग किया है। संगीत की लय तथा भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से मीरा के पद बेजोड़ हैं। मीरा के पदों में संगीत तत्वों के साथ मिलकर आत्मा एवं परमात्मा को एकाकार करने की शक्ति है। उनकी भक्तिमय पदों की संगीतमय अभिव्यक्ति तब चरम तल पर थी जब वे वृंदावन में आकर रहने लगी। कृष्ण की अनन्य भक्त मीरा पैरों में घुंघ

सरगम मन्दिर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें एवं वीडियो सी.डी.

Published & Printing by Shri Gyan Sagar Publications, Meerut

Crime Against Women

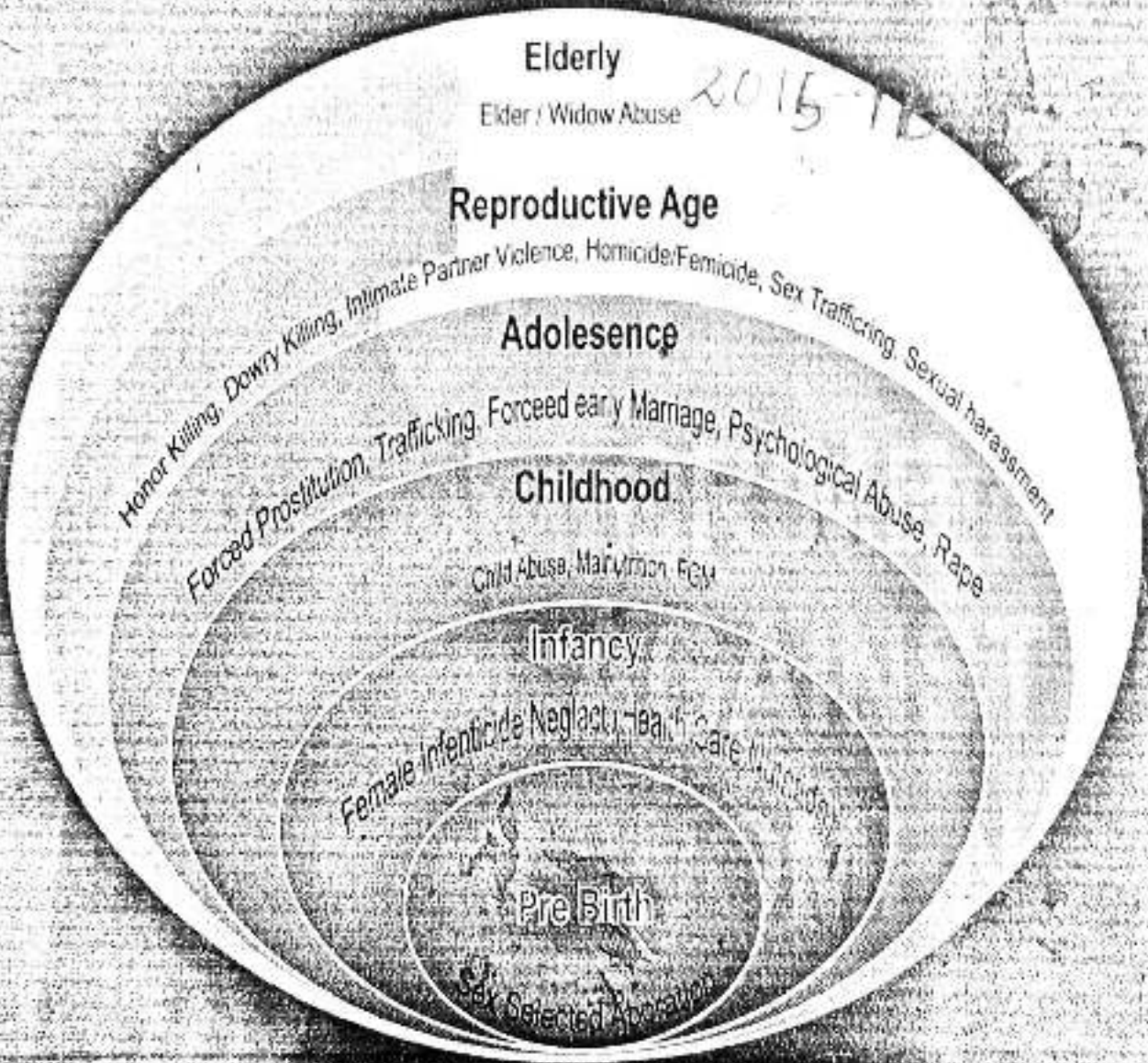

Life Cycle of Crime Against Women

Dr. Rajni Kashyap

Crime Against Women

Published By :
ANU BOOKS, MEERUT

First Edition : 2016

ISBN No. : 978-93-82166-47-4

@ All Rights Reserved

Price : Rs. 750 Only

Printed at:
Bhagwati Press,
Garh Road, Meerut

Note: The ideas and views express by the scholars in their full-length papers presented in the seminar and published in proceedings are solely their own. The organizing committee, college and editor of this proceedings may not necessarily agree with all the views expressed in the papers and not responsible for it.

Contents

1- Psychological Consequences in Female Crime Victims 1
Dr. Rakesh Kumar

2- Interpersonal exploitation, Domestic violence and Assertiveness as correlates of Health and Wellbeing Among Women : A Multivariate Study 7
Dr. Neeraj Chaudhary

3- Gender Inequality Is An Prominent Factor Behind Growth Of Population 22
Dr. Anshu Agarwal

4- Factors Responsible For Lack Of Safety Of Women 30
Dr. Alpna Agarwal
Pratibha

5- An Assessment of the Awareness of Violence against Women: A Review 36
Kavita Agarwal

6- Crime against women in India 47
Dr. Sandeep Kumar

7- Economics of Human Trafficking in India 57
Dr. Kirti Sharma

8- Social Freedom And Life Satisfaction Among Women 71
Shweta Dixit

9- Traditional, social and legal aspects 77
Dr. Kumkum Pareek
Badal Pareek

10- A Comparative Study of Defense Mechanism Patterns Of Hindu and Muslim College going female Students 86
Dr. Vandana Sharma

11- Forms And Types Of Violence 93
Dr. Suresh Kumar

12- Why Do Men Rape: A Psychological Overview 103
Dr. Madhu Bala

13- Violence against Women 113
Dr. Vandana Gupta

14-- Forms and types of Violence Against women: A survey report 117
Sunil Kumar

15- Psychological Cognizance of Violence Against Women 122
Dr. B.B. Tiwari
Shailaja Tripathi
Dr. Rajni Kashyap

16- Crime against women as a violation of human rights 134
Anjna Chetan

17- Violence against Women, Issues Challenges and Consequences 142
Dr. Archana Sharma

18- Social Support: An Influencing Factor For Mood States Among Women 151
Dr. Anshu Agarwal
Dr. Anshu
Anchal Malik

19- A Comparative Study of Domestic Violence in Working and Nonworking Women 159
Deepak Jain

20- Domestic violence Act: An Overview 170
Dr. Bina Rai

21- Crime Against Women: Issues Challenges and Intervention 190
Dr. Shalini Tyagi

22- Crime Against Women- In Special Reference To Honour Killing 197
Dr . Anjula Rajvanshi

23-Harassment of women in India 207
Dr. Shweta Tyagi

Traditional, social and legal aspects

Dr. Kumkum Pareek*
Badal Pareek**

Abstract

The abuse of women is the most pervasive and unaddressed human rights violation on earth. Crime against women has become a prominent topic of discussion in India. Crime against women takes shape of several forms like domestic violence, female infanticide, female foeticide, rape, molestation, dowry deaths and many more. The extent is such that every two minutes crime against women is reported. The condition of women in this country is deplorable which demands government intervention with all might and force. In this research paper, traditional, social and legal aspects of crime against women are discussed in detail. Due to traditions, social structures, stereotypes and attitudes about women and their role in society ,they particularly become vulnerable to certain crimes. This paper discusses in detail about the abovementioned and how empowering women is vital to any process of change and to the elimination of these harmful traditional practices. This paper also takes into account the social aspect of crime against women. The paper discusses the social standing of women in our India society as to what it was in the earlier times and how it has transformed over the years. Lastly the research paper talks about the legal aspects of crime against women. It takes into account the legal remedies that are available to the women of our country which are spelt out in different

*Asso. Prof., Dept of Psychology, R.G(P.G) College, Meerut.
** Advocate, Delhi High Court

Violence against Women, Issues Challenges and Consequences

Dr. Archana Sharma*

Abstract

This paper volume on violence against women is directed to policymakers and focuses on primary prevention, legal reform, health care interventions, victim recovery programs, and re-education programs for perpetrators. Violence against women includes rape, domestic violence, mutilation, murder, and sexual abuse. The impact on health should place the issues prominently in the public health context and should be seen as an obstacle to economic and social development. Violence against women is not inevitable. Some basic aspects of female-directed violence are that men familiar to women victims are the perpetrators, that prevalence spans all socioeconomic and education groups, that violence within families is as great as assaults on the streets, that most violence causing injury originates from men, that violence increases with time, that perpetrators are not mentally ill, that emotional abuse is as destructive as physical abuse, and that alcohol use exacerbates violence. Research studies on prevalence are clearly identified in a chart. A conclusion is that research has captured the severity of violence, but consequences and effective interventions are not as well understood. Well designed studies are needed to spur political action in specific countries. Developing countries such as India more often than not do not have statistics on sexual assault. Violence against women should be a recognized as a health issue by the government so as to

*Asso.Prof. and HOD, R.G PG College Meerut

Domestic violence Act: An Overview

Dr. Bina Rai*

Abstract

The origin of the Act lies in Article 15 (2) of the Constitution of India, which clearly says that "State can make special provisions for women and children" towards realizing the right to equality. This indicates the use of affirmative action to remedy a wrong. It is often said that India has several laws but they are not implemented. The problem, however, is not the lack of implementation, but the lack of a mechanism by which it can be implemented. Women have insufficient understanding of the law and lack of access to the courts. Hence it is necessary not only to enact a law but to provide the necessary infrastructural tools with which to access the law. The way of doing this is to put a mechanism in place in the law itself. Affirmative duties have been imposed on the government to provide legal aid, medical facilities and shelter homes in the hope that women in distress be given all these facilities. The Act is a statement of commitment by the State that domestic violence will not be tolerated.

Key Words: *Domestic Relationship, Domestic Violence, Physical, Sexual, Verbal and Emotional & Economic Abuse, Pervasive Discrimination, Substantive Inequality*

Introduction

India is a land of many contrasts and some great paradoxes. The subject of women may be seen as one of the glaring paradoxes. On the one hand, the involvement and participation of women in the political process, holding some of

*Asst. Prof., Dept. of Pol.Sci., R.G (P.G) College, Meerut

Crime Against Women- In Special Reference To Honour Killing

Dr. Anjula Rajvanshi*

A woman is suffering with many problems in her day to day life. Women in homes are suffering from domestic violence and working or school/ college going is suffering with public and occupational problems. According to Walsh and Furfey (1961:1) *A social problem has been defined as a "deviation from the social ideal remediable by group effort"*. In this definition we found two important elements-

1. A situation which is less than ideal or undesirable or abnormal or inappropriate for the individual and society.
2. Remedy of the problem by the effort of responsible persons of society.

According to Vani Prabhakar (2001:1) *Drug abuse, alcoholism, terrorism, poverty, unemployment and crime, are not individual problems but affect the public at large. Individual problem is one which affects only one individual or one group.*

Is honour killing a case of suicide or murder or crime? I discuss this query in our paper. Firstly I concentrate on Suicide. In my views honour killing is not suicide. Because according to Evam Sigler (2000:358) *Death resulting either from a deliberate act of self destruction or from inaction when it is known that inaction will have fatal consequences.*

Secondly I concentrate on Murder. It is a type of murder because one person kills the other person with the help of other society or family members. It is a planned crime and is performed on the behalf of caste or societal honour. Murder word is used in

*Dept. of Sociology, RG PG College, Meerut

Domestic violence Act: An Overview

Dr. Bina Rai*

Abstract

The origin of the Act lies in Article 15 (2) of the Constitution of India, which clearly says that "State can make special provisions for women and children" towards realizing the right to equality. This indicates the use of affirmative action to remedy a wrong. It is often said that India has several laws but they are not implemented. The problem, however, is not the lack of implementation, but the lack of a mechanism by which it can be implemented. Women have insufficient understanding of the law and lack of access to the courts. Hence it is necessary not only to enact a law but to provide the necessary infrastructural tools with which to access the law. The way of doing this is to put a mechanism in place in the law itself. Affirmative duties have been imposed on the government to provide legal aid, medical facilities and shelter homes in the hope that women in distress be given all these facilities. The Act is a statement of commitment by the State that domestic violence will not be tolerated.

Key Words: *Domestic Relationship, Domestic Violence, Physical, Sexual, Verbal and Emotional & Economic Abuse, Pervasive Discrimination, Substantive Inequality*

Introduction

India is a land of many contrasts and some great paradoxes. The subject of women may be seen as one of the glaring paradoxes. On the one hand, the involvement and participation of women in the political process, holding some of

*Asst. Prof., Dept. of Pol.Sci., R.G (P.G) College, Meerut

Harassment of women in India

Dr. Shweta Tyagi*

Humiliation, harassment, torture, and exploitation, of women are as old as the history of family life. As the world is leading in the technological improvement of material prosperity etc, the rate of unnatural sex and violence with women is also on the way. The harassment of women is a very serious issue that affects every corner of the world. Harassment is not only sexual harassment but it can be psychological harassment, cyber harassment, eve teasing. Sexual harassment is a form of harassment entails approaching or touching woman in a way that implies sexual activity or rape. Statistics reveal that 90% of all young females experience sexual harassment at least once during their texture at school. Psychological harassment is very common in work place which involves verbally abusing a woman by humiliating her. Another type of harassment, sexual orientation refers to harassing women who are homosexual or bisexual. It concerns cases. It concerns cases in which a woman is discriminated at work because of her sexual orientation. Cyber harassment concerns situations in which an individual uses the INTERNET to send a harassing messageto a woman. As such, many women and young girls experience cyber harassment. Rape and brutal murders have been so common now- a- days. Not only these dowry deaths, murder, bride burning etc are giving rise to harassment of women. In Bangladesh 90% of women has occurred throughout history and will likely keep occurring. As societies develop and become more sophisticated, the hope that harassment will slowly decline occurrence. To decline and overcome the problem of harassment, our constitution has made

*Senior lecturer, Dept. of Home Sci., R.G.(P.G) College Meerut.

Self Attested
28/09/21

WOMEN EMPOWERMENT THROUGH SKILL DEVELOPMENT

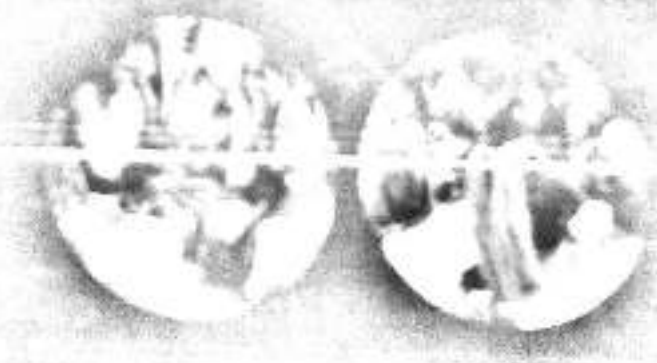

AMITA SAXENA

Published by:
Tilak Wasan
DISCOVERY PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.
4383/4B, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi-110 002 (India)
Phone : +91-11-23279245, 43596064-65
Fax : +91-11-23253475
E-mail : discoverypublishinghouse@gmail.com
sales@discoverypublishinggroup.com
web : www.discoverypublishinggroup.com

First Edition: 2015

ISBN: 978-93-5056-756-2

Women Empowerment Through Skill Development

© Editor

All rights reserved. No part of this publication should be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means: electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the author and the publisher.

This book has been published in good faith that the material provided by authors is original. Every effort is made to ensure accuracy of material, but the publisher and printer will not be held responsible for any inadvertent error(s). In case of any dispute, all legal matters are to be settled under Delhi jurisdiction only.

Printed at:
Infinity Imaging Systems
Delhi

PREFACE

The book *"Woman Empowerment Through Skill Development"* contains six chapters. All are from different professional experts. They de[s] how to empower woman, make them self dependent and gain a resp[ectable] status in the society. Through knowledge and skill development wom[en] be empowered and can improve her socio-economic status. The book de[als] empowerment through women entrepreneurship, community radi[o] are strengthening women's rights and acts, requirement of empowe[rment] of rural women for rural development, women empowerment and d[isaster] management, economic empowerment of women through textile acti[vities] empowering women through financial inclusion with special refere[nce to] Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna, Women empowerment in India thr[ough] personality development, female literary creation and humanistic fe[minism], women and environment, every where woman is necessary, after all fort[y] per cent population of India belongs to females. The progress of woman [is] progress of a nation.

CONTENTS

Preface

1. Women Entrepreneures and the Development in India 1
   —*Dr. Poorva Bhonde*
2. A Vision of Women Empowerment in Postmodern Indian English Fiction 9
   —*Dr. Sharmila Lahiri Maitra*
3. Beepeeping and Women 16
   —*Dr. Ruchira Tiwari*
4. Empowerment of Fisherwomen Through Community Radio 36
   — *Dr. Arpita Sharma, Dr. Aditya Sharma & Dr. Amita Saxena*
5. Poverty and Women Empowerment in India 45
   — *Dr. Amita Sarkar*
6. Value Addition of Fish Products by Women 50
   — *Dr. Amita Saxena*
7. Fashion-in India and Abroad, Across the Ages 68
   — *Dr. Darshan Malik, Dr. Promita Thakur, Dr. Sunita Singh, Dr. Jayita Thakur & Dr. Nijhawan*
8. The Constraints of the Life of One's Own 76
   — *Dr. Manju Kapur's*
9. Educational Scenario of Women in India 84
   — *Dr. Nidhi Mishra*

10. Status, Rights and Women Empowerment — 96
— *Dr. Akanksha Khati*

11. Empowerment of Rural Women for Rural Development — 112
— *Dr. Ritu Agrawal*

12. Strengthening Women's Rights through Collectives' Building — 127
— *Dr. Barnali Maity*

13. Woman Rights — 141
— *Dr. Geeta Bansal, Dr. Vandana Garg, Dr. Rashmi Gupta*

14. Women Empowerment and Disaster Management — 145
— *Dr. Kamana Singh*

15. Prospects and Problems Faced by Women Entrepreneurs in Coimbatore City — 163
— *Dr. Ms. D. Gomathi, Dr. S. Vasanthi*

16. Economic Empowerment of Women — 169
— *Dr. Ms. Parvathi Ganji*

17. Empowerment of Rural Women of Uttarakhand through Textile Activities — 175
— *Dr. Alka Goel & Dr. Neha Sah*

18. Empowering Women through Financial Inclusion with Special Reference to Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna — 198
— *Dr. Seema Jain & Dr. Manu Varma*

19. Economic Empowerment of Women — 208
— *Dr. Sunita Agarwalla*

20. Status of Women Empowerment in India — 222
— *Dr. Ms. Nidhi*

21. Personality Development — 226
— *Dr. Priya Narendra Kurkure*

22. Role of Women in Development of Enterpreneurship in India — 234
— *Dr. Anita Sharma & Dr. Divya Joshi*

23. Female Literary Creation and Humanistic Feelings — 249
— *Dr. Yun Fan & Dr. Guojun Cheng*

24. Women and Environment — 263
— *Dr. Xingli Wang*

25. Status of Women Self-Help Groups-Economic Empowerment — 287
— *Dr. M.C. Sahitya*

26. Egalitarian Status of Women In India — A Myth or Reality — 290
— *Dr. Sonika Choudhary*

WOMEN EMPOWERMENT THROUGH SKILL DEVELOPMENT
Edited by: Amita Saxena
ISBN: 978-93-5056-756-2
Edition: 2015
Published by: Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)

CHAPTER 26

EGALITARIAN STATUS OF WOMEN IN INDIA
A Myth or Reality

Dr. Sonika Choudhary
Assistant Professor, Dept. of Home Science, R.G. (P.G.) College, Meerut

ABSTRACT

The word 'egalitarian' in terms of the status of women in India who constitutes a sizeable proportion, is a paradox as is evidenced by the religious, socio-cultural, political and historical arena of the country. Even though much has been done through our constitution, legislations and a number of UN Conventions endorsed from time to time, still we have to go a long way to bridge the wide gap between theory and practice.

Key Words : *Egalitarian, status, women, India, historical perspectives, legislations*

Introduction

The status of women in modern India is a sort of rationality which we proclaim as part of our personality and society, seem to be in fact taunting the situation of women in our society. From the bygone days to the present progressive world, one can easily trace out the records of numerous tortures, harassment, pressure, assaults and exploitations a woman has gone through at various stages, different places and under myriad circumstances. The status of women in India has been subject to many great changes over the past few millennia. From equal status with men in ancient times through the low points of the medieval period to the promotion of equal rights by many reformers, the history of women in India has been eventful. Infact, the election of Mrs

Indira Gandhi as the first Prime –Minister of India in 1966 was r. not only for India , but for the World as well, since there were only t which had a woman head of the Government. Subsequently in mo women have adorned high offices in India including that of the Prime-Ministers, Speaker of the Lok Sabha, leader of opposition, etc. excelled in all fields i.e. Science, Technology, Politics, Academics Finance, Rural Development, Social Welfare, etc.

The Status of Women in Modern India

India is one of the largest democratic countries in the world ar constitute almost half of the total population but still they are undern in all the major sphere. The reasons for the same are many viz., illite pressure, lack of adequate experience, economic constraints, dor their male counterparts, etc. In India thousands of years of foreig and slavery has also played havoc with the status of women. Wc and have been considered to be powerless, bound by the shackles traditions and four walls of houses. Their education suffered and married off at an early age to keep them safe from the eyes of the Poor educational status of Indian women became a challenge in t her development and growth. Under feudalized system woman we as a property with no rights of her own and almost no say in de other affairs. For Centuries, women in India have been deliberate opportunities of growth in the name of religion and ancient soci practices. After independence, an effort has been made to amel position but so far a very small section of women has benefitted fro

With the realization that real development cannot take root if it women who not only represent nearly half of the country s total p accounting for 586.5 million in absolute numbers and around 48.4 as per 2011 census; but represent the very kernel around whic reorientation must take place, the Government of India has direc efforts towards removing various gender biases and thus guarar status to women as enshrined in the Indian constitution. Its variou articles, rights, plans, laws, etc are directed towards the betterment and to strengthen their position in society so that they can not o ahead but also protect themselves from various atrocities put on the

From the first five year plan, where the concept of women's dev was welfare oriented to the eleventh five year plan where it has fc empowering of women as the agents of social change and deve reducing disparities and achieving inclusive growth, a lot has been this field. Besides all this women are getting legislative support und Acts for their protection and empowerment. Many UN conventions

2015-16

SPORTS PSYCHOLOGY, YOGA AND PHYSICAL EDUCATION

Editors
Prof. N.B. Shukla
Dr. Sudha Bhushan Shukla
Tushar Dhar Shukla

Contant

A study of Psychological Variable Among Different Levels of Participation in Women, Cricket Players. 1-126

Jully Ojha and Prof. N.B. Shukla

Psycho- Social Study of Indian Sports Women of Marathwada Region 127-138

Dr. Smt. Barkat Sheikh

Effect of Suryanamaskara On Functional Mobility, Functional Reach And Trunk Flexibility of Elderly Men 139-155

Prof. N.B. Shukla, Sudha Bhushan Shukla, Bhawna Mittal and Tushar Dhar Shukla

Knowledge Testing 156-159

Pallavi Mishra and Prof. N.B. Shukla

A Comparision of Positive Mental Health between National Level Male and Female Basketball Players of Chhatisgarh State 160-163

Sudhir Rajpal, Dr. C.V. Raman, Dr. C.V. Raman

Effect Of Cyclic Meditation On Attention Of Students With Intellectual Disability 164-174

Parneeta Jindal, Shashi Kumar

आधुनिक जीवन में योग खेल एवं शारीरिक शिक्षा की भूमिका

प्रो० एन०बी० शुक्ला, तुषारधर शुक्ल, डा० शिवनाथ त्रिपाठी, पल्लवी मिश्रा, सुनीता सिंह, डा० सुधा भूषण शुक्ल 175-178

प्रस्तावना

पल्लवी मिश्रा, प्रो०एन०बी० शुक्ला, तुषारधर शुक्ल, डा० सुधा भूषण शुक्ल, डा० शिवनाथ त्रिपाठी 179-182

मानसिक स्वास्थ्य

पल्लवी मिश्रा, प्रो० एन०बी० शुक्ल, डॉ० सुधा भूषण शुक्ल एवं तुषार धर शुक्ल 183-22

http://dx.doi.org/10.1037/ sta. 055.0023.

Guillet, E., Sarrazin, P., & Fontayne, p. (2000). "If it contradicty my gender role, I' II stop!": Introducing survival analysis analysis to study the effects of gender typing on the time of withdrawal from sport practice: a 3-year study. European Review of Applied Psychology, 50, 417e421.

Hagger M (1997) Children's physical activity levels and attitudes towards physical activity. European physical Education Review 3, 144-164.

Hardin, M., & Greer, J. D. (2009). The influence of gender – role socialization, media use and sports participation of gender- appropriate sports.

Journal of Sport Behavior, 32,207e226.

Koivula, N. (1995). Rating of gender appropriateness of sports participation: effects of gender- based schematic processing. Sex Roles, 33, 543e557.

http:// dx.doi.org/ 1007/BF01544679.

Miller JL & Levy GD (1996) Gender role conflict, gender-typed characteristics, self- concept and sports socialisation in female athletes and non-athletes. Sex Roles 35,111-112.

Riemer, B.A., & Visio, M.E. (2003). Gender typing of sports: an investigation of Metheny's classification. Research Quarterly for Exercise & Sport, 74, 193e204.

EFFECT OF SURYANAMASKARA ON FUNCTIONAL MOBILITY, FUNCTIONAL REACH AND TRUNK FLEXIBILITY OF ELDERLY MEN

Prof. N.B. Shukla, Sudha Bhushan Shukla, Bhawna Mittal and Tushar Dhar Shukla

Abstract

Later adulthood or the period of old age begins at the age of sixty. During this stage most individuals lose their jobs because they retire from active service. They begin to fear about their physical and psychological health. In our society, the elderly are typically perceived as not so active, deteriorating intellectually, nanowminded and attaching significance to religion. Many of the old people lose their spouses and suffer from emotional insecurity. However, this may not be true of everybody. Many people at the age of sixty or above remain very healthy and active in life. The life style including exercise, diet and regular health check up helps people to enjoy meaningful and active life. Health is a strong predicator of well-being in late adulthood. When people face illness or chronic disabilities, they feel a loss of personal control. Not only does helplessness increase, but social isolation increases too. Research in India on yogic practices and geriatric population were limited. Hence to have a better understanding of Suryanamaskara and its contribution towards to geriatric population, the scholar will make an attempt to determine the effect of twelve weeks of Suryanamaskara on Functional Mobility, Functional Reach and Trunk Flexibility of elderly men. The

Discussion

The results of the study reveal that in the case of the experimental group, all the variables such as Functional Mobility, Functional Reach and Trunk Flexibility improved as a result of the I 2weeks training of Suryanamaskara. In the case of the control group, no changes were noticed in any of the selected variables during the same period.

Functional Mobility of the experimental group improved after the training programme. Factors contributing to the improvement of Functional Mobility are the flexibility of the hip joint and the strength of back, leg and abdominal muscles. The twelve Stages of the Suryanamaskara might have contributed to the improvement of the strength and flexibility of the back muscles, the flexibility of the hip joint and the improvement of the strength of the leg muscles.

Improvement was seen in Functional Reach in the experimental group following 12 weeks of Suryanamaskara. The Suryanamaskara might have provided daily challenges and practice opportunities for Functional Reach mechanisms. The practice of Suryanamaskara also increased the self- confidence of the elderly people in their abilities, in turn enhancing mobility.

An improvement was seen in Trunk Flexibility in the case of experimental group after 12 weeks of Suryanamaskara training. Stretch-ability, elasticity, mobility and suppleness are the essential components of flexibility. Stretch-ability and elasticity are the special qualities of the muscles and ligaments by which these can be stretched and can regain their normal length without any adverse effects on the

concerned tissue. The Suryanamaskara consists of 12 positions that move the spine in various ways and promote flexibility of the limbs and improved the strength of abdominal muscles.

The twelve Stages of the Suryanamaskara may be attributed to the improvement in the stretch-ability and elasticity of the muscles and ligaments around the hip joint. Suppleness is the ability of a muscle to remain in a state of low tension there by allowing for smooth and easy movements of limbs. Mobility pertains to the degree of movements possible in different planes at a joint. The 12 positions of the Suryanamaskara might have helped to improve the suppleness and mobility of the spine and back muscles.

Conclusion

It is concluded that the participation in twelve weeks of Suryanamaskara resulted improvement in Functional Mobility, Functional Reach and Trunk Flexibility of the subjects under the study.

References

1. Alan, Murray (1986) Return to Fitness. London: Bats Ford Ltd.
2. Alter, J. Micheal (1996) Science of Trunk Flexibility (2 Edn.) Champaign: Human Kinetics Publishers
3. Brandon, L.J.(2003) Effects of Long-Term Resistive Training on Mobility and Strength in Older Adults with Diabetes. Journal of Gerontology, Vol.58:740-745.
4. Brenda, WJ. Penninx, et al. (2001) Physical Exercise and the Prevention of Disability in Activities of Daily

Published By:
President
Indian Association of Sports Anthropometry
Varanasi - India

ISBN : 978-81-930250-2-4

Smt Sneh Gupta

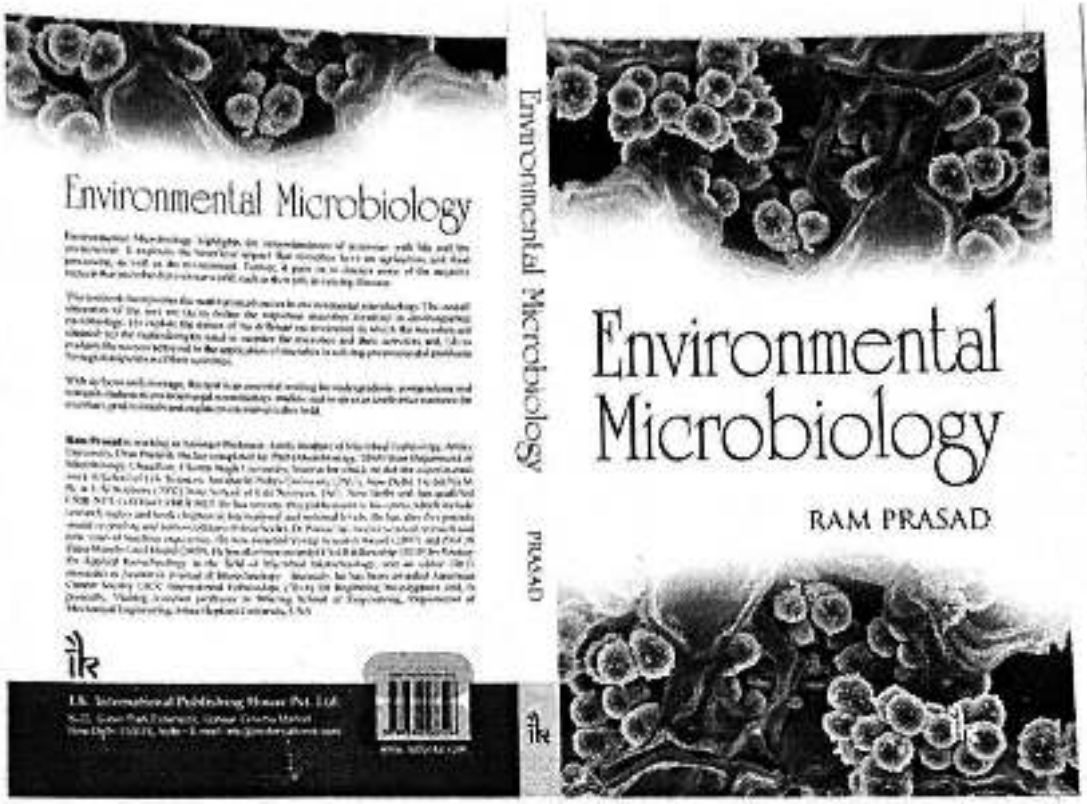

3

Role of Blue Green Algae in Environment Management

Charu Gupta[1]*, Dhan Prakash[1] and Sneh Gupta[2]

[1]*Amity Institute for Herbal Research and Studies, Amity University Uttar Pradesh, Sector 125, Noida-201303, India*

[2]*Department of Zoology, RGPG College, Meerut-250001 (UP), India*

Email: charumicro@gmail.com

1 INTRODUCTION

The term algae refer to microscopically small, unicellular organisms, some of which form colonies and thus reach sizes visible to the naked eye as minute green particles. These organisms are usually finely dispersed throughout the water and may cause considerable turbidity if they attain high densities. Cyanobacteria are organisms with some characteristics of bacteria and some of algae. They are similar to algae in size and in external appearance and requirements for light, nutrients and carbon dioxide, but unlike other bacteria; they contain blue-green and green pigments and can perform photosynthesis. Therefore, they are also termed blue-green algae (although they usually appear more green than blue). Blue-green algae occur naturally in habitats such as marine waters, rivers, lakes, damp soil, tree trunks, hot springs and snow. They can vary considerably in shape, colour and size. Blue-green algae are also known as cyanophytes, cyanobacteria and most recently cyanoprokaryotes.

Human activities (e.g., agricultural runoff, inadequate sewage treatment, runoff from roads) have led to excessive fertilization (eutrophication) of many water bodies. These have led to the excessive proliferation of algae and cyanobacteria in fresh water and thus have a considerable impact upon recreational water quality. In temperate climates, cyanobacterial dominance is most pronounced during the summer months, which coincides with the period when the demand for recreational water is highest.

Although many species of freshwater algae proliferate quite intensively in eutrophic water, they do not accumulate to form dense surface scums (often termed blooms) of extremely high cell density, as do some cyanobacteria. The toxins that freshwater algae may contain are therefore not accumulated to concentrations likely to become hazardous to human health or livestock. There are more than fifty (50) major types

17

Biodegradable Polymers from Microbes

Charu Gupta[1]*, Dhan Prakash[1] and Sneh Gupta[2]
[1]Amity Institute for Herbal Research and Studies, Amity University Uttar Pradesh, Sector – 125, Noida-201303, India
[2]Department of Zoology, RGPG College, Meerut – 250001 (UP), Indiaa
*E-mail: charumicro@gmail.com

ABSTRACT

Microbes are also the potential sources of biodegradable polymers besides plant carbohydrates. The main microbial polymers are polyhydroxyalkanoates (PHA) and polylactic acid (PLA). These polymers are biodegradable and have significant potential in biotechnology and bioengineering. *Azotobacter eutrophus*, *A. latus* and mutant strain of *Azotobacter vinelandii* are the major biopolymer accumulating bacteria. These biopolymers are produced by microbial fermentation whereas some are partially synthesized. The natural polymers are completely degraded by microorganisms by the process of enzymatic scission of the polymer chain. Besides these, some nylon eating bacteria like *Flavobacteria* and *Pseudomonas* are capable of breaking down nylon as they possess nylonase enzyme. Chitin is another biopolymer that finds applications in the cosmetic industry. The present chapter focuses on the biopolymers produced by microorganisms and their industrial importance.

Keywords: Biopolymers, Microorganisms, Biodegradable, Poly-hydroxy-alkanoates (PHA), Polylactic acid (PLA), Poly-3-hydroxybutyrate (PHB).

1 INTRODUCTION

In the last few years, there has been a gradual shift from the use of plastics to the biodegradable polymers. Plastic waste causes high degree of contamination, which requires high energy cost to recycle (Sanchez-Garcia et al., 2008). The plastic wastes are persistent in environment, causes dwindling of petroleum resources, shortage of landfill space, and emits poisonous gases during incineration thereby causing environmental pollution (Abdelwahab et al., 2012). Natural polymers are biodegradable as they can be disintegrated by the enzymatic action of microorganisms like bacteria, fungi, yeast into the carbon dioxide, water and biomass under the aerobic conditions and into hydrocarbons like methane and biomass under anaerobic conditions.

2015-16

THE IMMUNOMODULATORY EFFECTS OF NATURAL IMMUNOSTIMULANTS ON NON-SPECIFIC IMMUNE PARAMETERS IN *CHANNA PUNCTATUS* (BL.)

DR. SEEMA JAIN

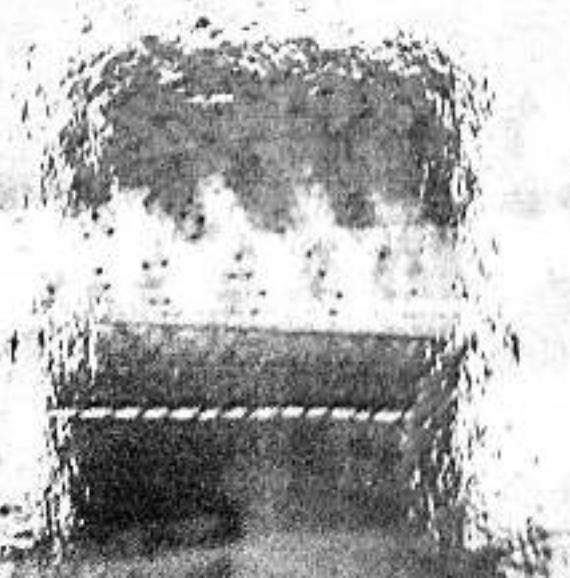

THE IMMUNOMODULATORY EFFECTS OF NATURAL IMMUNOSTIMULANTS ON NON-SPECIFIC IMMUNE PARAMETERS IN *CHANNA PUNCTATUS* (BL.)

DR. SEEMA JAIN
ASSO. PROF.
DEPARTMENT OF ZOOLOGY
R.G. (P.G.) COLLEGE, W. K. ROAD
MEERUT

Published By
Anu Books
Delhi
Visit us : www.anubooks.com

Published By :
ANU BOOKS,
Green Park Extension, New Delhi
Ph. 9997847837

THE IMMUNOMODULATORY EFFECTS OF NATURAL IMMUNOSTIMULANTS ON NON-SPECIFIC IMMUNE PARAMETERS IN *CHANNA PUNCTATUS* (BL.)

First Edition : **2015**

ISBN: **978-90-82166-43-6**

Price : **Rs. 250 /- Only**

@ **All Rights Reserved**

Printed at: **D. K. Fine Art Printers Pvt. Ltd.,**
New Delhi

ETHICS, GLOBAL PEACE AND VALUE EDUCATION

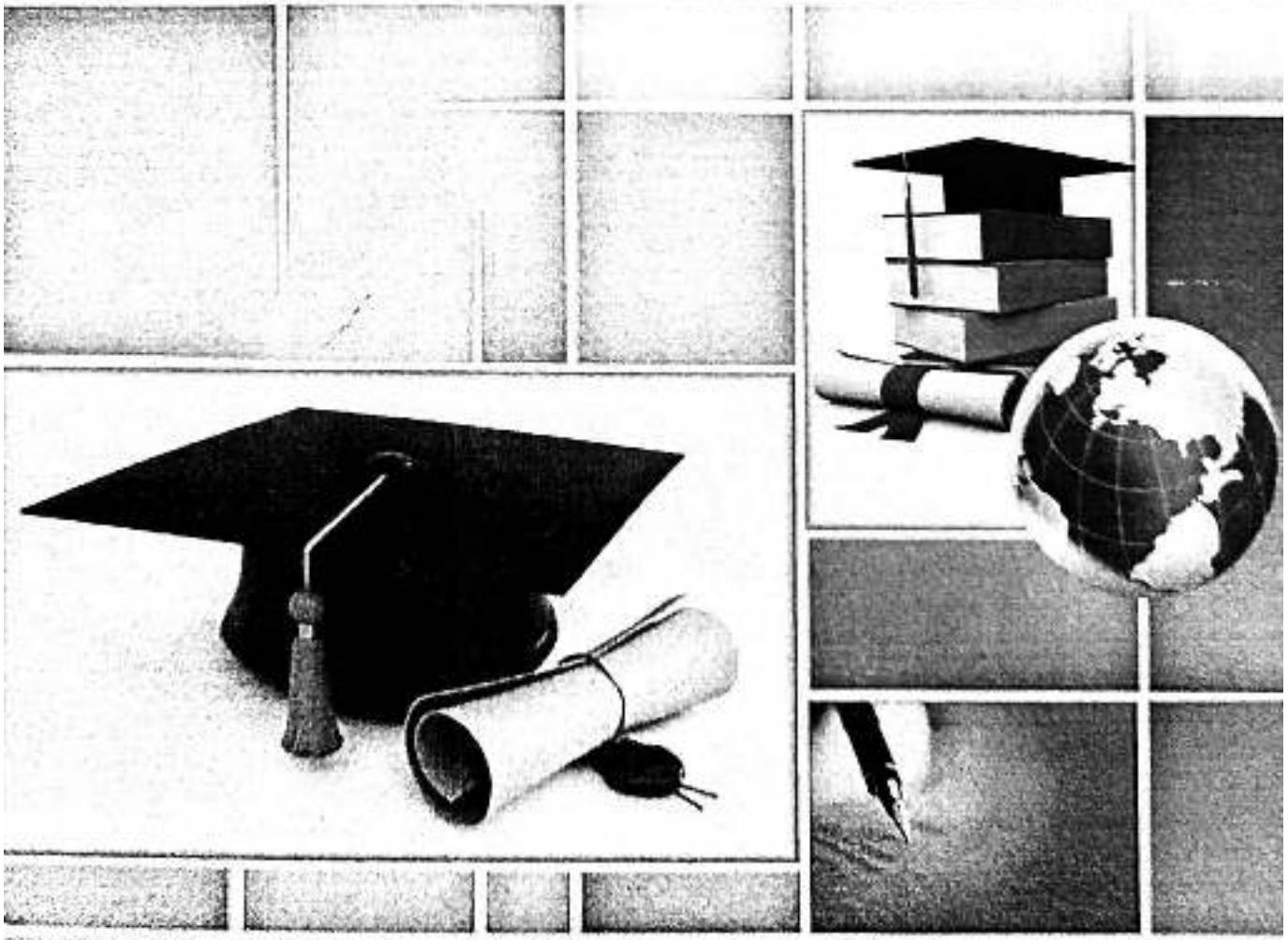

Edited by
Dr. S. P. Singh and Rakesh Kumar Keshari

Ethics, Global Peace and Value Education

Edited by

Dr. S.P. Singh

Rakesh Kumar Keshari

Principal
Bawan Instt. of Mang. Studies (B.Ed.)
Partapur By Pass, Meerut.

NEW DELHI PUBLISHERS
New Delhi

40

Class, Culture, Human Rights, Women Empowerment Education, Value Education and Ethics

[1]Laxman Sharma and Sundri Bala Sharma[2]

[1]*Research Scholar, Mewar University*
[2]*H.O.D. Department of Education, R.G.P.G College Meerut*

Meaning of Class, Culture, Human Rights, Women Empowerment Education, Value Education And Ethics

Class : Woman used to look in the role of Mother, Sister, Daughter, Wife, sister-in-law, Daughter-in-law etc. These were the class of women in old India or we can say in old world. But with changing the time the definition of class has changed. There are many problems in the present time for the women but it was not in old time actually there were a lot of problems with them and now the central Government, state government, NGOs and UNO are thinking about the poor condition of them and working in the field of awareness by which they acquire knowledge, skills, values, experiences, and also the determination. If we look at the mission statement of any women's studies or job in any department in all over the country or world, we talk about "Gender and Class." That shows the holy trinity of the feminist movement. But raising process used so effectively by the early women's movement has been extended to race but not to class. Women talked about their experiences growing up in a gendered society as girls and the differential experiences of males and females. One National Women's Studies Association conference was entirely about race, and every single participant spent a lot of time in a small group of examines their presences. There are many groups for women like Latina women, African women, American women, Jewish women, etc. If it is to split the problem of women, to separate women from the whole working class, then we have failed that all social life and all political problems are first and foremost

28 A Study of the value among prospective teachers 112
Anita Rai

29 Learning to live togather in present scenario 113
Amita Sharma

30 Role of spirituality in finding inner peace and well being 114
Girdhar Lal Sharma

31 Value education: need of the hour for today and tommorow 123
Varsha pant

32 Empowering Learners through Value Education 129
Puneet Kumar and Rachit Kumar

33 Value education and role of teacher 135
Suchitra Devi

34 Innovative curriculum for value education 141
Anupama Tyagi

35 Progressive Outlook of Value Education 147
Rakesh Rai

36 Peace and Education in Present Global Scenerio 149
J.S. Bhardwaj and Chanchal Tyagi

37 Curriculum and Curricular Activities for Value Education in School 150
Anjali Raj

38 Value Education Enhances Peak Performance of an Individual 151
Sarita Sharma and Shivani Shrivastav

39 Spiritual Intelligence 157
Harleen Kaur, Navdeep Kaur and Surinder Kaur

40 Class, Culture, Human Rights, Women Empowerment Education, Value Education and Ethics 161
Laxman Sharma and Sundri Bala Sharma

41 Spirituality : Help to Make Student's Moral 168
Soniya Yadav

42 Human Rights and Widows in Vrindavan 171
Jagdeep Singh

Ethics, Global Peace and Value Education Edited By Dr. S.P. Singh and Rakesh Kumar Keshari, New Delhi Publishers, New Delhi.

© Author

First Edition 2016

ISBN: 978-93-85503-38-2

All rights reserved. No part of this book may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted, by any means, electronic mechanical, photocopying, recording, or otherwise without written permission from the publisher

New Delhi Publishers
90, Sainik Vihar, Mohan Garden, New Delhi – 110 059
Tel: 011-25372232, 9971676330
E-mail: ndpublishers@gmail.com
Website: www.ndpublisher.in

ISSN 2277-582X

वर्ष 4 अंक 1 अक्टूबर 2015

JOURNAL

शोध ज्ञानान्तिका

National Journal of Research

सम्पादक

डॉ0 सुभाष चन्द्रा

आरक्षण का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य: अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के विशेष सन्दर्भ में 46–57
सुधीर कुमार

अनुदानित एवं गैर–अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि व व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन 58–64
मधुमती

वेदों में गणित के स्रोत 65–69
प्रविन्द्र कुमार

सामाजिक उपेक्षा का शिकार तेजाब पीड़ित महिलायें 70–71
डॉ0 रणवीर एवं भूपेन्द्र गाटी

जनपद मेरठ में गंगा बाढ की आपदा: स्थानिक एवम् जनसाँख्यिक आपदा प्रबंधन एवम् पुनर्वास का एक अध्ययन 72–80
डॉ0 अनुभूति एवं प्रवीन कुमार

भारत में प्रौढ़ शिक्षा का विकास : समस्या व समाधान 81–84
डॉ0 सुविता कुमारी

गन्ना मूल्य निर्धारण में भारतीय किसान यूनियन की भूमिका 85–88
कपिल वर्मा

Changing Role Of Women In Family Through ICT 89-94
Meena & Prof. Yogendra Singh

Political Participation of Women in India 95-98
Dr. Deepa Panwar

"Oedipus Complex" in the play Desire Under the Elms by Eugene O'Neill 99-101
Babita & Vipin Kumar

Child Labour: A Touchy Issue 102-109
Dr. Manju Lata

Women Entrepreneurship in Uttar Pradesh- An Overview 110-115
Megha Kansal